प्रकाशक
राजराजेश्वरप्रसाद भार्गव,
हिन्दी विश्व-भारती कार्यालय,
चारबाग, लखनऊ.

मूल्य
एक रुपया बारह आना

विषय-सूची

सबसे लम्बा और सबसे ठिगना मनुष्य

संसार भर में सबसे लम्बा आदमी जैक अर्ल है। आपकी लम्बाई ८ फ़ीट ७ इञ्च है। सबसे ठिगना आदमी मेजर माइट है। आपकी लम्बाई बड़े होने पर केवल २ फीट २ इञ्च है। आयु ३० वर्ष है। [लम्बाई का सम्बन्ध एन्डोक्रीन ग्लैण्ड से है और ठिगनेपन का पिट्यूटरी से।]

गाड़ी में सवारी के स्थान पर केवल पूँछ

हवाई ट्रामगाड़ी

५० फ़ीट ऊँची मुगर्दा
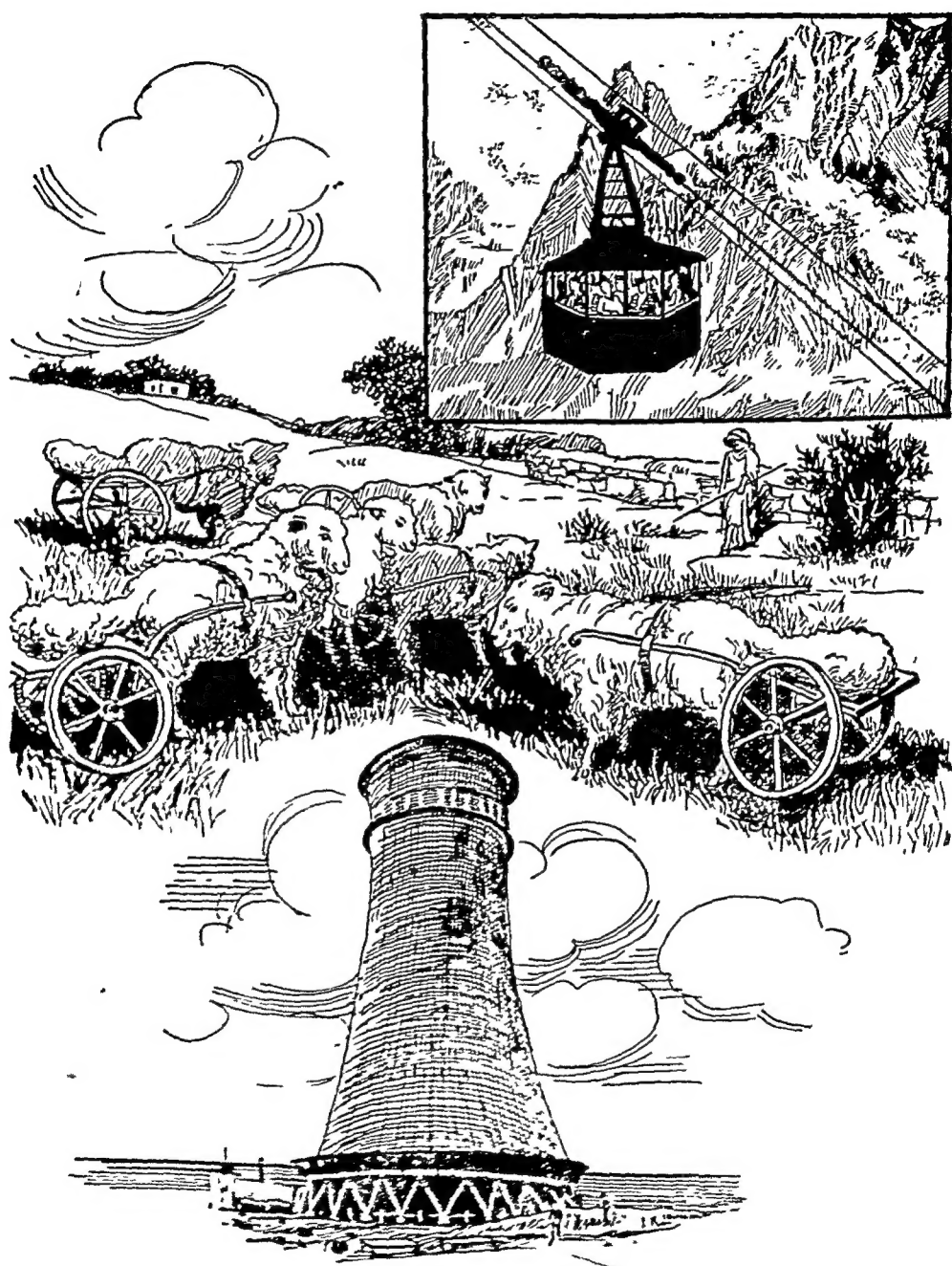
हवाई ट्रामगाड़ी—उत्तरी अमरीका के कैनन पहाड़ पर आने-जाने के लिये एक हवाई ट्रामगाड़ी बनाई गई है। इसमे धातु के बने अठपहलू डिब्बे होंगे, और प्रत्येक डिब्बे में २५ यात्री बैठ सकेंगे। मोटे-मोटे तारो मे लटके हुए, गिर्री की आकृति के यन्त्रो पर अवस्थित, यह डिब्बे पहाड़ पर आया-जाया करेंगे। असख्यो यात्रियों के परिचित 'पहाड़ के वृद्ध पुरुष' नामक स्थान से डेढ़ मील की दूरी पर फ्रैंकोनिया से यह ट्रामगाडी चला करेगी।

गाड़ी मे सवारी के स्थान पर केवल पूँछ—मध्यवर्त्ती एशिया की भेड़ो की पूँछे भर पेट भोजन मिलने के कारण बहुत मोटी हो जाती हैं। एक-एक पूँछ तोल मे चार-चार पाँच-पाँच सेर की होती है। ये भेड़े बहुधा बाजार मे बिकने आती हैं। अपनी सर्वोत्तम भेडों के लिये गड़रिये छोटी-छोटी गाडियाँ बनाते हैं। वे उन्हे इन गाडियों मे जोत देते हैं और इनकी पूँछों को सवारी के स्थान पर रख देते हैं और बाजार को हाँक ले जाते हैं।

२५० फ़ीट ऊँची सुराही—लङ्काशायर के बिजलीघर के लिए ससार भर में सबसे बड़ी पानी ठढा करनेवाली सुराही बनाई गई है। यह कॉंक्रीट की बनी है और ऊँचाई में २५० फीट और घेरे मे १७५ फीट है। इसमे प्रति घटा ३० लाख गैलन पानी ठढा होता है। इस सुराही का वज़न ५,००० टन है और इसको ६० आदमियों ने १० मास मे बनाकर तैयार किया था।
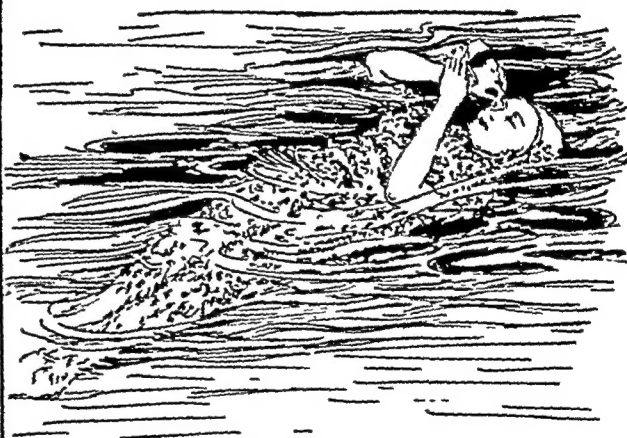
डूबने का भय जाता रहा

न्यूयॉर्क सिटी के एक होटल के स्नान-कुण्ड मे श्रीयुत एलबर्ट एल० समर्स ने अपने आविष्कृत तैरने के कपड़ों को इस युवती को पहनाकर पानी में डूबने के भय को दूर कर दिया है। यह कपड़े बहुत हलके होते हैं, क्योंकि इनके अस्तर में छोटी-छोटी सैल्युलॉइड की थैलियाँ होती हैं जिनमें हवा भरी रहती है और एक वनस्पति-पदार्थ भी भरा रहता है जो काग (cork) की अपेक्षा आठ गुना हल्का होता है। चित्र में युवती इस नये आविष्कार को पहने पानी में चित्त तैर रही है।

मादाम आइमी

मिश्रा एल्वा
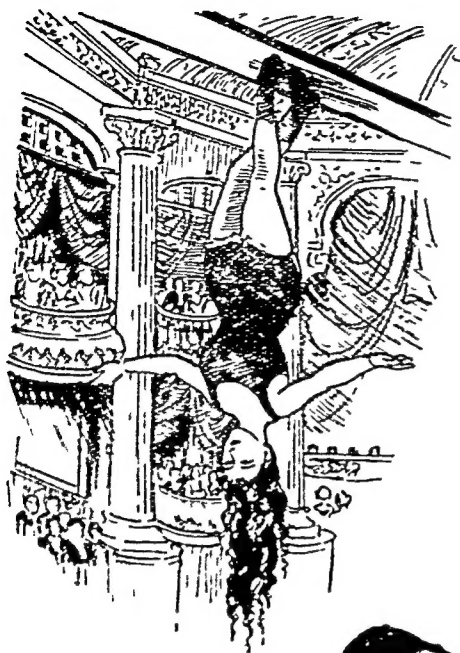
कैलिफोर्निया की दुलारी ग्रिफिन

अधर में सिर नीचे पॉव ऊपर करके चलनेवाली महिला—सन् १८८० ई० का सबसे अधिक आश्चर्य में डालनेवाला काम था मादाम आइमी का अधर में सिर नीचे और पॉव ऊपर करके चलना। यह काम मक्खी का है। परन्तु मादाम आइमी ने मक्खी का काम करके कमाल ही कर दिखाया। सरकस की छत में एक तख्ता बाँध दिया जाता था। आइमी उस तख्ते पर उल्टी लटककर चला करती थी, ठीक उसी प्रकार जैसे वह जमीन पर चलती थी। उसके बाल नीचे को लटके रहते थे और वह बाँहों को फैला देती थी।

आइमी के मरते दम तक कोई भी उसके रहस्य को न मालूम कर सका। एक मनुष्य ने मादाम आइमी के खेल की नक़ल करने का दुस्साहस किया। उसने ज्यों ही हवा भरे हुए तले के जूते पहनकर तख्ते पर चलने का उपक्रम किया, त्यों ही वह धड़ाम से गिर पड़ा और मर गया। तब से फिर किसी ने वैसा दुस्साहस करने का प्रयत्न नहीं किया है।

एकदम पॉच-पॉच—थिआ एल्वा एक बार में ही एकदम पाँच विभिन्न शब्द, किसी भी भाषा के हों, लिख देती है।

विशेष कारण है—कैलिफोर्निया की कुमारी ग्रिफिन का कहना है कि मैं इस छोटी-सी पैरगाड़ी पर चलना इसलिए पसन्द करती हूँ कि इस पर से बहुत नीचे गिरने का कोई भय नहीं है। कुमारी ग्रिफिन तोल में केवल ६ मन १३ सेर के लगभग हैं।

जुगनुओं के प्रकाश में
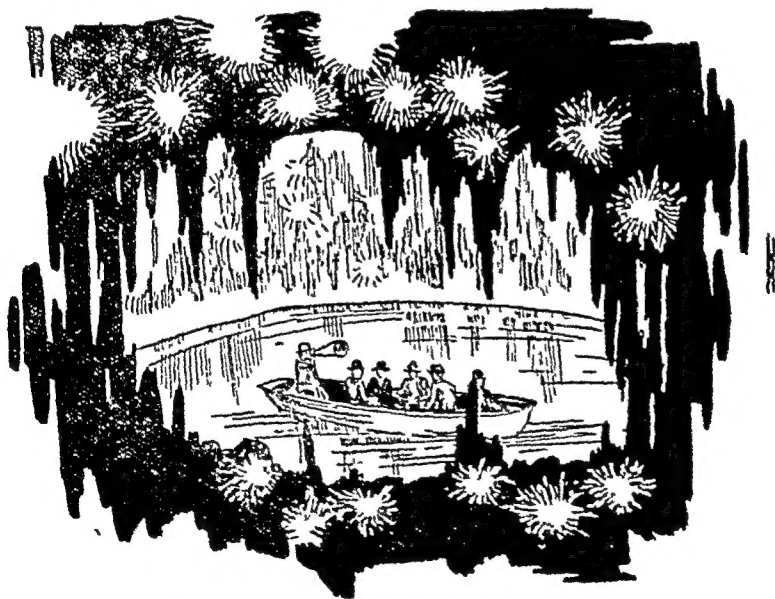
न्यूजीलैण्ड की इस दर्शनीय गुफा में सदैव ही असंख्यों जुगनुओं का पर्याप्त प्रकाश रहता है।
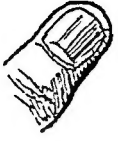
कौन कितने समय में ?

उँगली का
नाख़ून — वर्ष भर मे २॥ इञ्च बढता है।

मनुष्य का
बाल — ,, ,, १६ ,, ,, ,, ।

बाँस — ,, ,, ३२ ,, ,, ,, ।

घोंघा — एक दिन में ५० इञ्च चल पाता है।

ताजी हवा — एक घंटे में ५ मील चलती है।

मनुष्य पैदल — ,, ,, ६॥ ,, चलता है।

मुर्गी — ,, ,, १२ ,, चलती है।

मनुष्य — ,, ,, १४॥,, दौड़ लेता है।

हाथी — ,, ,, २५ ,, ,, ,, ,,।

[illegible] मनुष्य — ,, ,, [illegible] ,, ,, ,, ,,।

तलवार की आकृति
की मछली एक घंटे में ३० मील दौड़ती है।
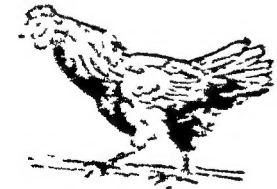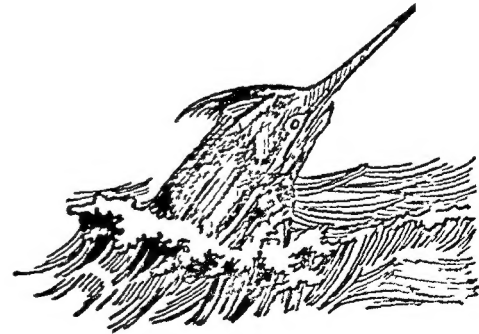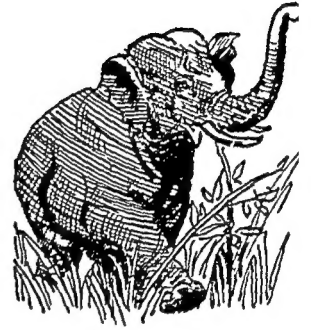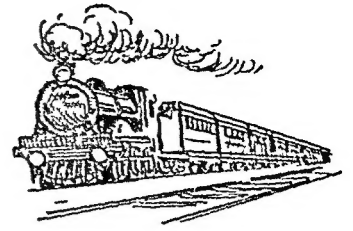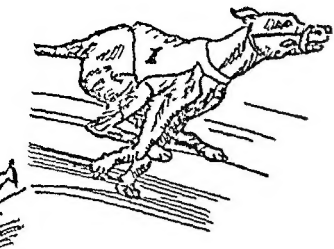
कौन कितने समय में ?

शिकारी कुत्ता एक घंटे में २६ मील दौड़ता है।

समाचार-वाहक
कबूतर ,, ,, ४० , उड़ता है।

घुड़सवार ,, ,, ४१ ,, जाता है।

जहाज ,, ,, ५६ ,, ,, ,,।

मोटर बोट ,, ,, १२५ ,, जाती है।

उड़ान ,, ,, १२५ ,, उड़ता है।

रेल ,, ,, १२५ ,, जाती है।

समुद्री-यान ,, ,, ४४० ,, जाता है।

शब्द ,, ,, ७६० ,, ,, ,,।

बवंडर ,, ,,१,२०० ,, ,, ,,।

बन्दूक की
गोली ,, ,,१,८०० ,, जाती है।

प्रकाश एक सैकंड में १८६३२५,, जाता है।

विचार सबसे अधिक वेगगामी है।
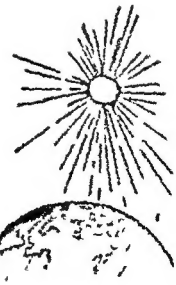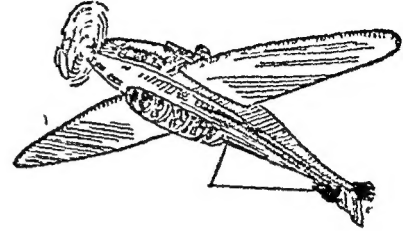
जापान की सम्राज्ञी

जापान की सम्राज्ञी

ईंदो के सुन्दर हरे-भरे राजमहल के चारो ओर ऊँची-ऊँची दीवारे बनी हैं। कोई भी अपरिचित अथवा परदेसी इसके भीतर नहीं जा सकता। यदि कोई ऐसा साहस भी करे तो असम्भव है। पाँच मील की दूरी से ही राजदरबान दिन-रात चौकसी करते रहते हैं। इतना सब जापान की सम्राज्ञी नागाको के 'आदर' के लिये किया जाता है।

जहाँ एक ओर खेल के मैदानो में नारियों की स्वतन्त्रताप्रिय पीढी आनन्द के जयघोष से दिशायें गुंजाया करती हैं, जापानी युवतियाँ वायुयानों में उड़ती फिरती हैं अथवा व्यापार की सँभाल रखती हैं, समाचार-पत्र और फैशन की पत्रिकायें पढती हैं, सिनेमा देखती हैं, दूसरी ओर जापान की सम्राज्ञी की ४० परिचारिकाएँ यह चौकसी रखती हैं कि उनकी सम्राजी संसार की घटनाओं से पूर्ण अपरिचित रहे।

सम्राज्ञी का एक ही स्वामी है, सम्राट् हिरोहितो। उन्हें केवल अपने पति का ध्यान करना चाहिए और उनके अतिरिक्त पाँच अन्य विषयों का—सूर्य्य, सङ्गीत, सुमन, पक्षी और सुगन्ध। और कुछ जानने की आवश्यकता नहीं और न ही कोई उनसे अन्य विषयो पर विवाद कर सकता है।

सम्राज्ञी बहुत बढ़िया मलमल का श्वेत वस्त्र पहने रहती हैं और एक अमूल्य मुक्ताहार।

केवल सम्राट् ही उनसे सम्बोधन कर सकता है। जब तक सम्राज्ञी प्रथम न बोल ले औरों का मौन रहना परमावश्यक है। केवल २००० वर्ष पुराने घरानों को ही सम्राज्ञी से मिलने का अधिकार है।

सम्राज्ञी के निकट कोई भी समाचार-पत्र अथवा पत्रिका नहीं जा सकती। उन्होंने कभी भी टेलीफोन नहीं देखा है। वे रेडियो के नाम से भी अपरिचित हैं।

उनकी प्रजा पाँच वर्ष से चीन से युद्ध कर रही है परन्तु नागाको को इसका पता भी नहीं। योरुप में भीषण युद्ध हो रहा है, इसकी उन्हे हवा भी नहीं।

सम्राट्, युवराज, उच्च पदाधिकारी, परिचारक और परिचारिकाएँ बहुत ध्यान रखते हैं कि राज-प्रासाद की वायु बाह्य ससार की घटनाओं से लेशमात्र भी दूषित न होने पावे, कारण कि ईंदो की सीमा के भीतर केवल सौन्दर्य और मनोमोहक उच्च विचारों का ही वातावरण वाञ्छनीय है।

वर्ष मे केवल तीन बार सम्राज्ञी राज-प्रासाद से बाहर जाती हैं। पहली बार अपने जन्म-दिवस के अवसर पर श्वेत रेशमी परिधान धारण किये हुए वे सम्राट् का स्वागत करती हैं। दूसरी बार वे ग्रीष्म की छुट्टियाँ मनाने के लिये अपने प्रतापी पति के साथ राजधानी से प्रस्थान करती हैं, और तीसरी बार जाडे की छुट्टियाँ मनाने के लिये जाती हैं।

इन अवसरों पर सम्राट् और समाजी दक्षिण की ओर एक राज-प्रासाद मे जाकर निवास करते हैं। यहाँ दोनों प्राचीन ढङ्ग की बनी हुई एक तरणी मे जिसकी देखभाल के लिए जापानी बेडे का एक आधुनिक ढङ्ग का बना हुआ ध्वसक जहाज नियुक्त रहता है, सैर किया करते हैं। इस ध्वंसक जहाज़ की तोपें अन्य जहाज़ों को दूर रखती हैं।

सम्राज्ञी के आनन्द के लिए सङ्गीत का आयोजन रहता है, वह भी एक बहुत ही सकुचित सीमा के भीतर। यदि सम्राट् सम्राज्ञी पर बहुत कृपालु हुए तो प्रधान मन्त्री प्रिन्स कोनोई के भ्राता काउण्ट हाईदीमारो कोनोई द्वारा आयोजित प्राचीन आरकेस्ट्रा (बाजे की मण्डली) का सङ्गीत सुनने की आज्ञा दे देते हैं।

सुमनों, पक्षियों और सङ्गीत से आनन्द लेने के अतिरिक्त सम्राजी नागाको अपना समय अपने ही पुष्पोद्यान के फूलों का इत्र निकालने मे व्यतीत करती हैं। राज-प्रासाद में एक छोटी-सी प्रयोगशाला का भी प्रबन्ध है।

सम्राज्ञी को नितान्त अज्ञान में रहना पड़ता है, ससार से दूर, जीवन से अपरिचित। पिछले अस्सी वर्षों में जापान ने पश्चिम से बहुत कुछ सीखा है और पचा भी लिया है। किन्तु जो बातें नागाको की ग़रीब-से-ग़रीब प्रजा तक को मालूम हैं वे उन्हें स्वयं नहीं मालूम। प्रतिबन्ध की हद हो गई!

मौ
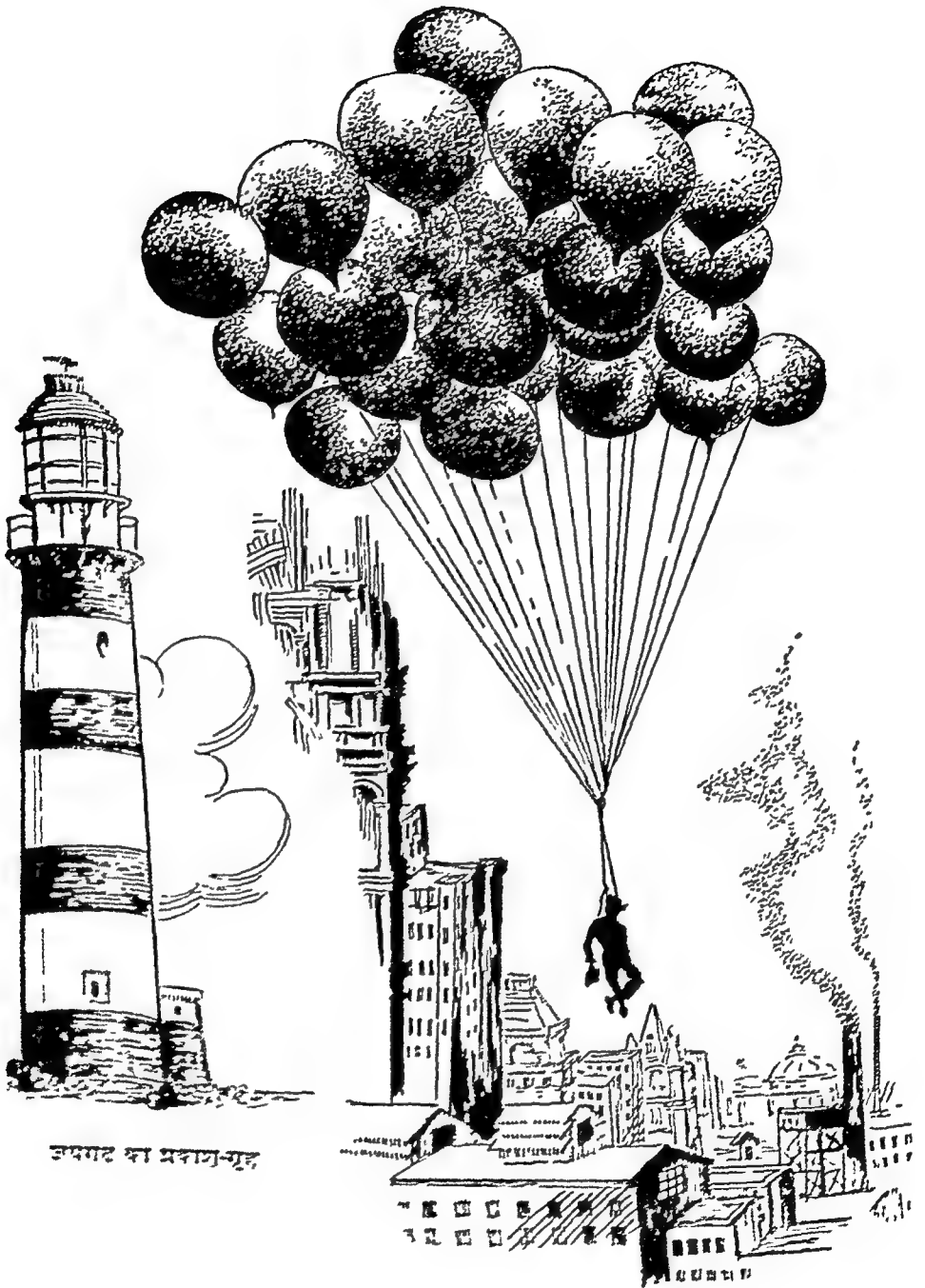
उपगाट का प्रकाश-गृह

फ़ोटोग्राफ़र का साहस

जयगढ़ का प्रकाश-गृह—सन् १६३३ ई० मे दक्षिण भारत में रत्नगिरि से २४ मील की दूरी पर जयगढ़ नामक स्थान मे इस प्रकाश-गृह का उद्घाटन हुआ था। इसका प्रकाश ४ लाख ६० हजार मोमबत्तियो के प्रकाश के बराबर है और १७ मील की दूरी से दिखाई पड़ता है।

फोटोग्राफ़र का साहस—न्यूयॉर्क-निवासी एल मिङ्गलोन ने एक दिन आकाश से विशेष फोटो लेने का विचार किया। इसने बहुत से गुब्बारे इकट्ठे किये, उनमे गैस भरी, और उन सबको एक रस्सी मे बाँधकर रस्सी को अपनी कमर से बाँध लिया। तदुपरान्त एक लम्बी रस्सी का एक सिरा अपने पैरो से बाँधकर दूसरे सिरे को किसी खूँटे से बाँध दिया। जब वह उठने लगा अकस्मात् खूँटेवाली रस्सी टूट गई और वह उड़ चला। पादरी मुलन उसे उस दशा में देखकर दौड़े। अपनी बन्दूक से गुब्बारो मे ताक-ताककर निशाने लगाये और सफल हुए। मिङ्गलोन सकुशल पृथ्वी पर आ गया। वह घबराया हुआ था।

एक कुत्ते की शक्ति से चलनेवाली गाड़ी

यह अपने ढङ्ग की निराली गाड़ी महाशय विग्ग ने जो बहुत काल तक कुत्तो के शिक्षक रह चुके हैं बनाई है। यह गाड़ी गिलहरी के पिंजड़े के सिद्धान्त पर बनी है। बीच मे एक विशाल पहिया रहता है जो कि कुत्ते के उसके भीतर चलने या दौड़ने से घूमता है। कुत्ते को एक विशेष पट्टा पहनाकर पहिये के बीच मे एक डडे से बाँध दिया जाता है। पिछले पहियों को चलाने के लिये पेटियों और गिर्री की आकृति के यन्त्रों से काम लिया जाता है और इन पर ड्राइवर का पीछे के डडों को उठानेवाले लीवर द्वारा पूर्ण अधिकार रहता है।

टेलीफोन नम्बर याद थे। उसकी नोट-बुक मे सहस्रो ही प्रमदाओं के नाम, पते और टेलीफोन नम्बर दर्ज थे। प्रतिदिन ही उसके कृपाकटाक्ष की इच्छुक ५० या ६० ललनाएँ उसके सम्मुख उपस्थित की जाती थीं।

उसको गर्व था कि उसके द्वारा अमरीकन युवती के सौन्दर्य-सुयश का विस्तार हुआ। बहुधा वह साधारण असुन्दर युवतियों को जिनकी ओर कोई दूसरी बार आँख उठाकर भी नहीं देखता था परम रहस्यमयी सुन्दरियों के रूप में नाट्यशाला के मञ्च पर खड़ा करके दर्शकों की आँखों में चकाचौंध पैदा कर देता था। रूप और लावण्य द्वारा कोई भी युवती उसकी नाट्यशाला के मञ्च पर आकर अपना भविष्य सुधार सकती थी। जो कुछ उनमें जादू होता था वह ज़ीगफैल्ड की अपनी देन थी।

अपव्यय करने में ज़ीगफैल्ड किसी भी राजा-महाराजा से कम न था। केवल वस्त्रों के लिए वह लाखों डॉलर व्यय कर डालता था और उनके लिए योरुप, भारतवर्ष और एशिया के बाजारों को छान डालता था। वस्त्रों के अस्तर तक बढ़िया-से-बढ़िया रेशम के होते थे। उसका विश्वास था कि कोई भी स्त्री अपने को तब तक सुन्दरी अनुभव नहीं कर सकती जब तक कि उसके तन को सुन्दर वस्त्र न स्पर्श करें।

उसने 'शो बोट' को तीन महीने के लिये स्थगित कर दिया था—कारण कि उसको उपयुक्त हैट न मिल सके थे। एक नाटक पर ढाई लाख डॉलर व्यय करने के उपरान्त उसने उसे एक ही बार स्टेज करके फिर न खेलने दिया। कारण कि उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह नाटक ज़ीगफैल्ड-परम्परा के योग्य न था।

उसने जो कुछ भी किया पूर्ण ठाठबाट के साथ ही किया। यद्यपि उसके यहाँ सैकड़ों ही पत्र आते रहते थे, परन्तु उसने आजीवन उत्तर में कभी एक पत्र नहीं लिखा। पतझड़ में जैसे हवा के झोंके के साथ पत्तियाँ उड़ती फिरती हैं, उसी प्रकार उसके यहाँ तारों और केबलों (cables) का ताँता बँध जाता था। वह जहाँ भी जाता था, अपने साथ में ब्लैंक तार के फार्म ले जाता था। स्टेशन से दफ्तर पहुँचने तक वह पूरा पैड समाप्त कर देता था।

यों विश्वास नहीं होता, परन्तु यह सत्य है कि नाट्यशाला में ही मञ्च पर सूचना भेजने के लिए वह तार के फार्म से ही काम लेता था। वह किसी को पुकारकर कहने के स्थान मे उसको तार द्वारा ही सूचना देता था। एक बार उसने अपने वातायन से झाँककर अपने सामने के वातायन मे खड़े एक पुरुप से उच्च स्वर मे कहा—"मैंने तुमको तार दिया था। तुमने उसका उत्तर नहीं दिया!"

उसके लिये टेलीफ़ोन-घर के सामने से बिना दर्जनों आदमियों को कॉल किये निकल जाना एक असम्भव बात थी। अपने वेतनभोगियों को टेलीफोन करने के निमित्त वह नित्य ही छः बजे प्रभात मे जग पड़ता था। सत्रह-अठारह डॉलर की बचत के लिये वह घटों उपाय सोचा करता था और दूसरे दिन ही लाखों डॉलर वॉल स्ट्रीट में खोने में उसे किञ्चित् भी देर न लगती थी। उसने एक बार ५,००० डॉलर उधार लिये और अपने देश के इस पार से उस पार जाने के लिये एक स्वतन्त्र रेलगाड़ी किराया करके व्यय कर डाले।

उसके सौम्य व्यवहारमात्र से ललनाएँ अपने को सुन्दर अनुभव करने लगती थीं। नाटक की प्रथम रात्रि में कोरस की प्रत्येक युवती को उसकी ओर से फूलों का गुच्छा भेंटस्वरूप मिलता था। वृद्ध अर्द्ध-विक्षिप्त महिलाओं के साथ भी उसका व्यवहार सदैव सौम्य और मृदु होता था।

अपनी ख्यातनामा स्त्री-पात्रों को वह प्रति सप्ताह ५,००० डॉलर वेतन देता था। और प्राय सीज़न के समाप्त होने पर उनके पास उसकी अपेक्षा बैंक में अधिक ही डॉलर होते थे।

कोरस में भाग लेनेवाली युवतियाँ प्रारम्भ मे ३० डॉलर प्रति सप्ताह पाती थीं, परन्तु पीछे से १२५ डॉलर तक उनको दिया जाता रहा।

उसने चौदह वर्ष की आयु से ही शो (प्रदर्शन, नाटक, सर्कस आदि) के कार्य में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। घर से भागकर उसने सर्वप्रथम बफ़ैलो बिल के वाइल्ड वेस्ट शो में निशानेबाजी और अश्वारोहण का प्रदर्शन कर कीर्तिलाभ की।

पच्चीस वर्ष की आयु होने पर वह सुप्रसिद्ध पहलवान सैन्डो के यहाँ मैनेजर बन बैठा और अतुल धनराशि एकत्रित की।
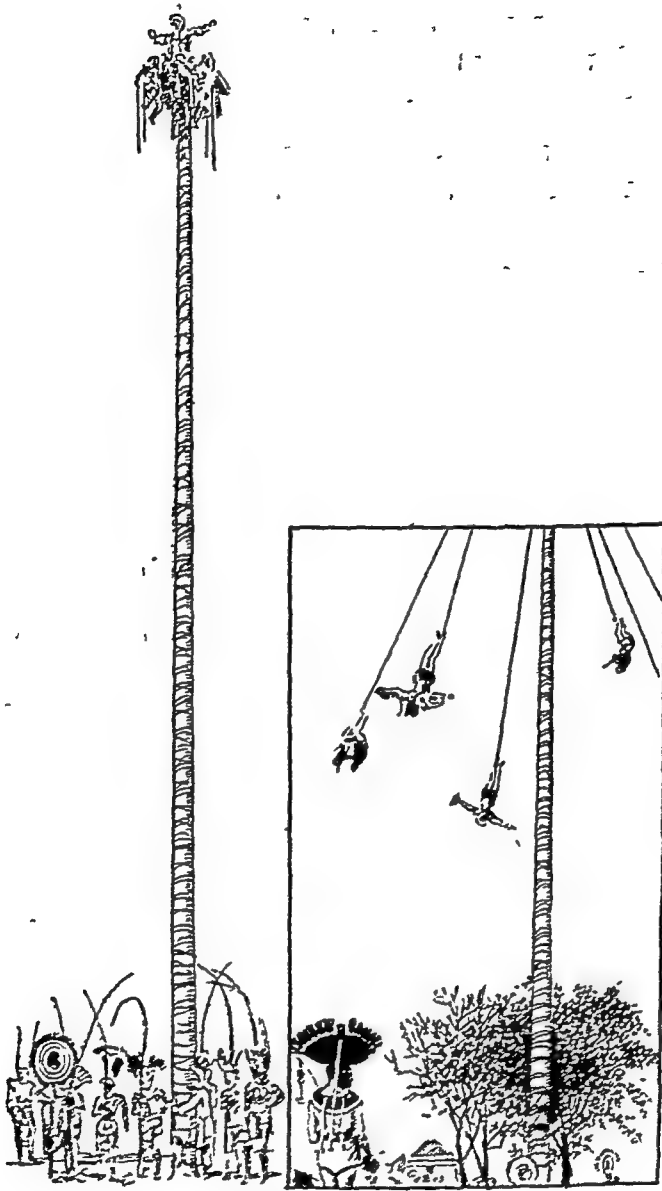
विचित्र रज्जु-नृत्य

मैक्सिको के यह छः नर्तक पचास फीट ऊँचे बाँस पर चढ़कर प्रथम एक घूमते हुए तख्ते पर नाचते हैं। तदुपरान्त अपने-अपने टखनों में रस्सी बाँधकर वे सिर नीचा कर खुलती हुई रस्सी के साथ वेगपूर्वक चक्कर खाते हुए नीचे आ जाते हैं।

अल्यूमीनिअम का सूट

अमरीका निवासी महाशय हर्बर्ट विल्क अल्यूमीनिअम के बने कपड़े, जूते और टोप पहने हुए हैं।

अल्यूमीनिअम का गाउन

यह महिला अल्यूमीनिअम के बने वस्त्र पहने हुए है।
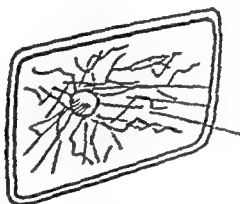
न टूटनेवाला लचीला काँच

जब ३० फ़ीट की ऊँचाई से एक नया पाव की इस्पात की गोली इस काँच पर डाली गई वह उभर गया और उसमें दरारें पड़ गईं, पर वह टुकड़े-टुकड़े न हुआ। ऊपर के चित्र में एक मनुष्य काँच के ऊपर खड़ा हुआ है। यही उसके बोझ से झुक गई है, पर टूटी नहीं। ठण्डे-[illegible] या गर्मी का इस काँच पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह प्रत्येक दशा में अटूट और दृढ़ बना रहता है।

एक वृक्ष पर फल का बाग़

१९२६ में मेजर फ्रैंक ए० गुड ने न्यू ब्रंजविक में एक सेब के वृक्ष पर १७ क़लमें लगाई थीं। उन्होंने सङ्कल्प किया था कि ब्रंज़विक में उगनेवाले समस्त सेब एक ही सेब के वृक्ष पर उगाये जावें। फलस्वरूप उनको अपने उद्योग में आशातीत सफलता हुई। कदाचित् संसार भर में अपनी तरह का यह एक ही बाग़ है।

ह्वेल मछली
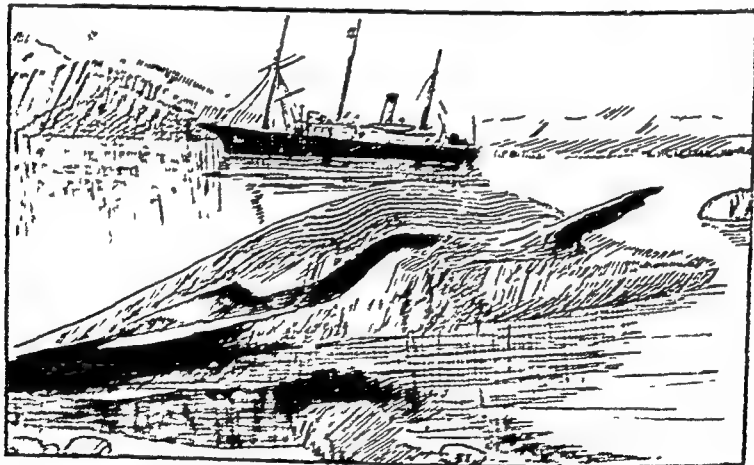
ह्वेल मछली हाथी से भी बड़ी होती है और यह अपने बच्चों का लालन-पालन पृथ्वी पर रहनेवाले जीवों की भाँति ही करती है। इसके मस्तक में चर्बी होती है जिससे एक तेल निकलता है जो मक्खन आदि के बनाने में और बत्तियों आदि को मशीनरी साफ करने के काम आता है। ह्वेल मछली सौ फीट तक की लम्बाई की पाई जाती है। और इसकी आयु ४०० से ५०० वर्ष तक की होती है।

कंगारू
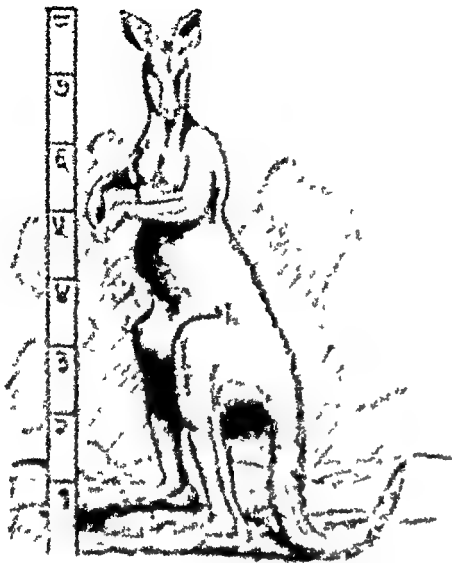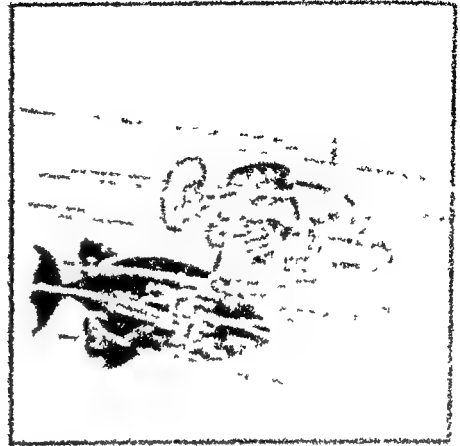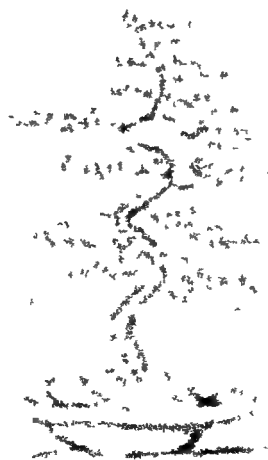
बया

बया अपना घोंसला सी कर बनाती है। उसकी चोंच सुई का काम देती है और लताओं के तन्तु तागे का।
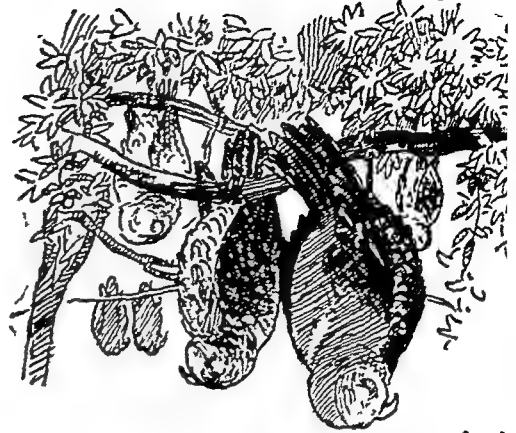
चिमगादड़ की तरह सोनेवाले

यह तोते चिमगा तरह वृक्ष की शा लटक जाते हैं और सोया करते हैं। मलयप्रदेश में ऐसे तोतों की लगभग २० जातियाँ हैं।

नीला सारस

अपने पङ्खों को स्वच्छ रखने के लिये यह अपने पङ्खों में एक कङ्घा रखता है।

सारस

घड़ियालों के लिए सारस दाँत कुरेदनी का काम देते हैं। घड़ियाल अपने मुख को खोले रहते हैं और सारस उनके दाँतों में से मांसादि के टुकड़ों को चुग लेते हैं!

समुद्र की लहरों पर चलनेवाली चिड़िया !

इसके तन में इतना अधिक तेल होता है कि यह अपने गले और नासिका-रन्ध्रों से उसे निकाल देती है।
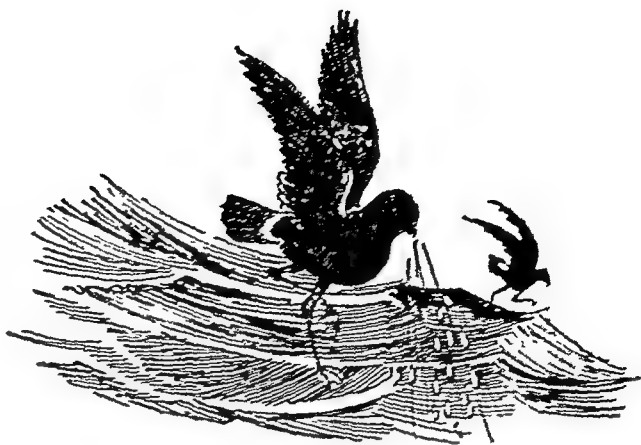
मोमबत्ती के समान जलने-वाली मछली !

इस मछली के इतना अधिक तेल होता है कि इसको सुखाकर और इसके शरीर में एक बत्ती रखकर जलाने से यह मोमबत्ती के समान प्रकाश देती है।

योरप का मेंढक

यह मेंढक अपनी पीठ पर गेंदी रखकर अपने घर के स्वामी को दे आता है!

मेंढकी वर्षा में दो से लगाकर चार सौ तक अंडे देती है। इन अंडों को मेंढक लगाकर अपने शरीर से तीन सप्ताह तक लपेटे रहते हैं!

क्लाइड बीअटी

इसके जीवन का बीमा नहीं हो सकता !

बाघ उसके शरीर को नखों से खरोंच चुके हैं और उसके मांस का स्वाद चख चुके हैं। सिंह के दाँत उसकी टाँग की हड्डी तक घुस चुके हैं; हाथी उसको ज़ख्मी कर चुके हैं; रीछ अपने पञ्जों से उसके शरीर को रौंद चुके हैं; एक तेंदुए ने तो उसके बड़े-बड़े घाव कर दिये थे और लकड़बग्घों ने उसे काट तक खाया है। इक्कीस बार बुरी तरह चीथी हुई दशा में वह अस्पताल भेजा जा चुका है। अन्तिम बार, जब उसके सबसे अधिक ख़ूँख्वार सिंह नीरो ने उसके प्राण ही ले लिये होते, उसे दस सप्ताह तक अस्पताल में रहना पड़ा था और उसने अपनी एक टाँग से तो लगभग हाथ ही धो डाले थे।

क्लाइड बीअटी का काम बहुत ही जान जोखिम का है। प्रतिदिन दो बार उसको मृत्यु का सामना करना पड़ता है। बीमा कम्पनियाँ जानती हैं कि किसी क्षण भी पशुओं के नख और पञ्जे उसे चीरकर फेंक दे सकते हैं। इसीलिये तो वे उसके जीवन का बीमा नहीं करतीं। सर्कसवालों में वही एक ऐसा खिलाड़ी है जिसके जीवन का बीमा नहीं हो सकता।

वह कभी-कभी सर्कस के काम को छोड़ने की इच्छा भी करता है, किन्तु और कोई काम उसे पसन्द नहीं। और उसका कहना है कि यदि उसने कोई दूसरा काम किया भी तो उसमें उसका जी न लगेगा और वह मर जायगा। और जब मरना ही है तो मन के प्रतिकूल काम करके मरने की अपेक्षा पशुओं के हाथों मरना कहीं अच्छा है।

क्लाइड बीअटी का सर्कस में काम करते हुए लगभग आधा जीवन बीत चुका है। उसका जन्म चिलीकोथ, ओहियो, में हुआ था। और जब वह छोटा बालक ही था तभी से सर्कस के पीछे पागल था।

एक दिन की बात है। बार्नम और बेली का प्रसिद्ध सर्कस उसके नगर में आया हुआ था। एक पंसारी ने अपनी दुकान में उसका एक पोस्टर लगा रक्खा था। बहुत ही सुन्दर पोस्टर था, पीले, बैंगनी और लाल रंगों में। उसमें एक बड़ा चित्र बना हुआ था, जिसमें अफ्रीका के अनेक दहाड़ते और घूरते हुए शेर और चीतों को एक वीर शिकारी अपने कोड़े से वश में किये हुए था। बीअटी भागकर पंसारी की दुकान में घुस गया और उसने वह

का कहना है कि उसे नहीं मालूम। वह सिंहों और बाघों से भरे हुए पिंजरों में रहा है और उसने देखा है कि लड़ते समय सिंह सब मिल जाते हैं और बाघ अकेला ही लड़ता रहता है। जब एक सिंह लड़ने का श्रीगणेश कर देता है, तो अन्य सब सिंह उसकी सहायता को आ जाते हैं; यदि वे सहोदर हुए तो अवश्य ही। सिंह का आचरण बालकों जैसा होता है—वे गुट्ट बनाकर ही लड़ सकते हैं। किन्तु बाघ को इतना ज्ञान नहीं होता। वह अपने स्थान पर बैठा ऊँघता रहेगा और उसके सम्मुख ही दूसरे बाघ के प्राण हरण होते रहेंगे।

क्लाइड बीअटी का एक अत्यन्त मनोरञ्जक खेल है, रीछ को कलामुंडी खिलाना। उसने अकस्मात् ही इस खेल का खिलाना जान लिया था। एक दिन वह पिंजरे के भीतर था जब एक रीछ दाँत निकाले, पञ्जों को फैलाये और आँखें क्रोध से उन्मत्त कर उस पर झपटता हुआ आया। यह रीछ उसे मार डालने को आया था और उसका आक्रमण इतना आकस्मिक और भयानक था कि बीअटी को उस क्षण एक ही काम करने की सूझी। एक ओर हटकर उसने रीछ की नाक पर तानकर घूँसा मारा। घूँसा पड़ते ही रीछ उछला और कलामुंडी खा गया। बीअटी ने यह देख लिया और उसकी समझ में एक खेल आ गया। आज के दिन तो वह केवल अपने चाबुक से धीरे से उसकी नाक पर मार देता है और रीछ महाशय एकदम कलामुंडी का खेल दिखा देते हैं।

जन्तुओं के सम्बन्ध में जितना क्लाइड बीअटी को ज्ञान है उतना संसार भर में किसी दूसरे को नहीं है। उसको केवल एक पशु से ही अत्यन्त स्नेह है। वह है कुत्ता।
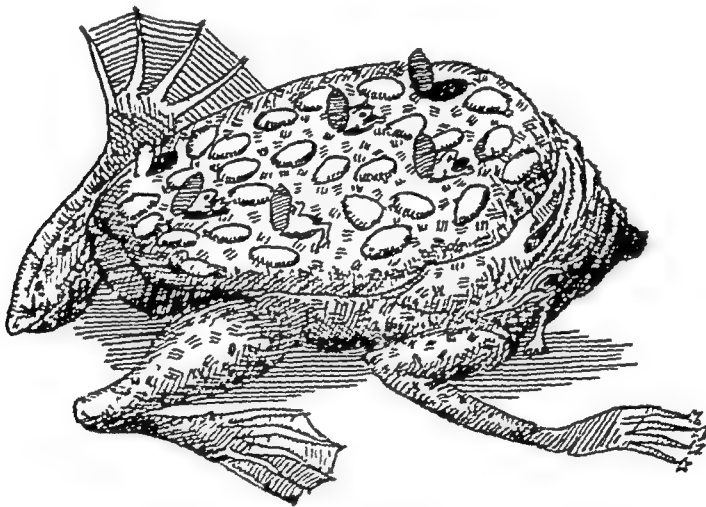
सुरीनम मेंढक

यह मेंढक गायना और ब्राज़िल के पानी से भरे हुए जङ्गलों में रहता है। जब मेंढकी अपने अंडों को पानी में रख देती है, उसकी पीठ की खाल बहुत कोमल और गुदगुदी हो जाती है। मेंढक एक-एक करके सब अंडों को मेंढकी की खाल में रख देता है। यह खाल तुरन्त ही जैसी पहले थी वैसी हो जाती है। प्रत्येक अंडे को रहने के लिये अपना निजी घर मिल जाता है। इन घरों में यह अंडे बड़े हो जाते हैं और छोटे-छोटे मेंढक यथासम्भव इनमें से निकल आते हैं। प्रत्येक मेंढकी की पीठ में ६० से लगाकर १२० अंडे रखे हुए पाये गये हैं।

संसार भर में सबसे मोटा आदमी

डैनिअल लैम्बर्ट संसार भर में सबसे अधिक मोटा था। लैस्टर में सन् १७७० ई० में उसका जन्म हुआ था। १३ वर्ष की आयु में वह तोल में ५ मन २८ सेर था। ३९वें वर्ष में जब वह ९ मन ४ सेर का हुआ उसकी मृत्यु हो गई। उसकी वेस्ट कोट, जिसकी कमर का माप १०२ इंच है, किङ्गस् लिन् म्यूज़िअम में प्रदर्शनार्थ रखी है।

एक अपूर्व खेल !

भारतीय बाजीगर का अचिन्त्यसनीय खेल !

संसार भर में सबसे मोटा आदमी

डैनिअल लैम्बर्ट संसार भर में सबसे अधिक मोटा था। लैस्टर में सन् १७७० ई० में उसका जन्म हुआ था। १३ वर्ष की आयु में वह तोल में ५ मन २८ सेर था। ३९वें वर्ष में जब वह ९ मन ४ सेर का हुआ उसकी मृत्यु हो गई। उसकी वेस्ट कोट, जिसकी कमर का माप १०२ इंच है, किङ्गस् लिन् म्यूज़िअम में प्रदर्शनार्थ रखी है।

एक अपूर्व खेल !
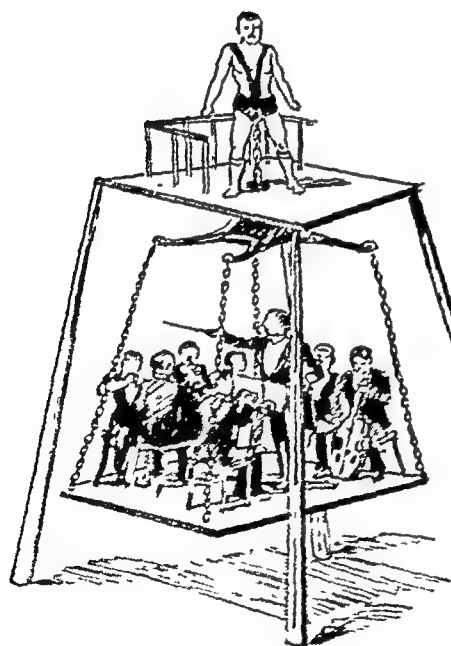
भारतीय बाज़ीगर का अविश्वसनीय खेल !
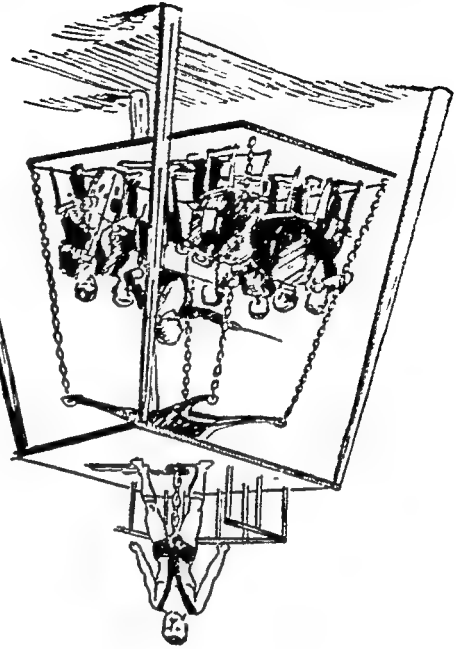
एक अपूर्व खेल !

सर्कस के अनेक अद्भुत खेल किसी चालाकी पर निर्भर नहीं होते। उन्हें खेलने के लिए केवल असाधारण मानसिक तथा शारीरिक बल की आवश्यकता होती है। उदाहरणार्थ, उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में रस्सो नामक एक पहलवान हो गया है। वह एक ऊँचे प्लैटफ़ार्म के बीच से एक छेद करके एक दूसरे प्लैटफ़ार्म को जिस पर पूरा आरकेस्ट्रा रहता था अपनी गर्दन में ज़ंजीर से बाँधकर खड़ा हो जाता था !

भारतीय बाज़ीगर का अविश्वसनीय खेल !

इस बाज़ीगर ने दो अंग्रेज़ों के सामने साँपों की पोटली को अपनी आँखों के तारों से उठाया था। पहले इसने एक बारीक मोटी रस्सी से गठरी के चारों छोरों में गाँठ बाँधी। फिर इस रस्सी के दोनों छोरों पर शीशे (धातु) की एक-एक छोटी प्याली बाँधी। इन प्यालियों को इसने अपनी आँखों के तारों पर जमाकर रख लिया। तदुपरान्त पलकों द्वारा प्यालियों को दबाकर और खड़े होकर उसने उस गठरी को उठा लिया।

जब प्यालियाँ हटाई गईं तो उनमें से हवा निकलने का शब्द हुआ। बाज़ीगर की आँखें लाल थीं और कुछ देर तक वह कोई भी वस्तु देखने में असमर्थ था। आँखों से आँसू बह-बहकर कपोलों पर आ रहे थे।
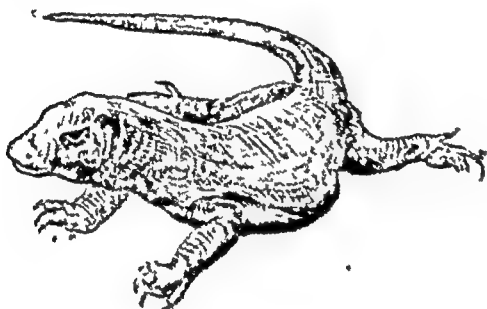
मांस खानेवाली छिपकली

आदि युग के दिनोसौर के वंश में उत्पन्न यह छिपकली पूर्वी भारतवर्ष के एक द्वीप में देखी गई है। यह कभी-कभी १२ फ़ीट तक लम्बी होती है।

संसार भर में इस मुर्गी ने सबसे अधिक संख्या में अंडे दिये !

३६५ दिनों में इस मुर्गी ने १५० अंडे दिये थे। हाल ही में एक मुर्गी ने १५२ दिनों १५२ अंडे दिये हैं।

दूध देनेवाला बकरा

यह [illegible] बकरा [illegible] ने [illegible] में लाया गया है। यह [illegible] दूध देता है। [illegible]

एक मनुष्य ७० वर्ष की आयु तक कौन पदार्थ किस परिमाण में खा लेता है यह निम्नलिखित तालिका से प्रकट है—

पदार्थ	टन
अंडे	३
रोटी	६
मांस	६
दूध	६
शराब	८
मक्खन	१½
अचार	१
जल	२७
चाय	½
कहवा	¼
अन्य शाक	६½
फल	२½
मसाले	¼
शक्कर	१½
नमक	⅙
अन्य पदार्थ जिनमें मिठाइयाँ भी हैं	१⅙
कुल	३०

[१ टन = २७¼ मन]

अतिरिक्त वस्तुएँ जिन्हें वह काम में लाता है—

३५० दियासलाई के बक्स; २ लाख सिगरेट। २५० दर्जन उस्तरे और लगभग ५ मन तेल के जूते!
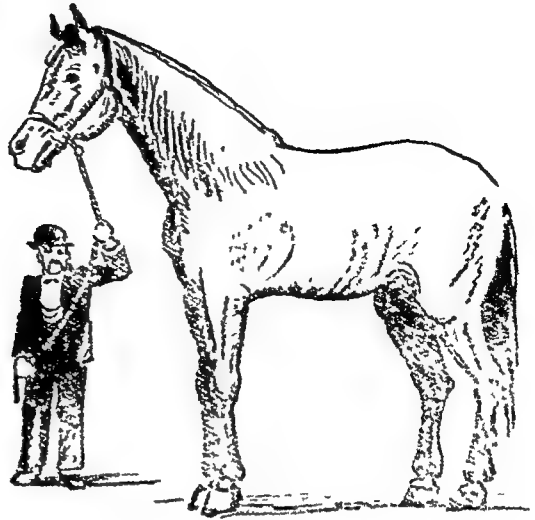
पीटर महान्

यह संसार भर में सबसे बड़ा घोड़ा है। दो वर्ष की आयु में ही यह २२॥ हाथ ऊँचा था। कानों के सिरों तक इसकी १३ फीट ५ इञ्च ऊँचाई है। इसके स्वामी का नाम है ए० एन० हिल जो संयुक्तराज्य अमरीका के निवासी हैं।

ऊँचा टोप

बवेरिया (जर्मनी) के गाँवों में त्योहारों के अवसर पर वहाँ के निवासी विचित्र टोप पहनते हैं। इस प्रकार के टोप पर मृत पक्षियों और अन्य जन्तुओं की प्रदर्शनी सी इनकी निशानी हो गया है। जितना ऊँचा जिसका टोप और जितनी भयानक उस टोप की आकृति उतनी ही अधिक उसकी प्रशंसा होती। ऐसे टोप पर पारितोषिक भी दिया जाता है।

सूअर महोदय

ऐसा [illegible] केवल ऐसे सूअर महोदय के लिए [illegible] [illegible] द्वारा [illegible] है। [illegible] आपकी क्या राय है ?

रण भी शिक्षा दी जा सकती, न उसका घराना ही शिक्षा-प्रेमियों का था और न उसके मित्र सम्बन्धी ही ऐसे विचारवान् थे जिनसे उसे अपना जीवन सुधारने की अथवा राज्य-सस्थापन करने की प्रेरणा मिलती।

इस बीसवीं शताब्दी में उस समय जबकि वैज्ञानिक उन्नति पराकाष्ठा पर पहुँच चुकी थी, सभ्यता का चहुँओर बोलबाला था, अनेक राजे, महाराजे, सम्राट्, नेता, विद्वान्, शान्ति-सुख भोग रहे थे, एक साधारण चाय-रोटी बेचनेवाले ने डाकू बनकर कुछ साथियों की सहायता से अफगानिस्तान में वह भय का साम्राज्य विस्तार किया, वह आतङ्क जमाया कि अन्ततोगत्वा वह स्वय उसका राजा बन गया। जहाँ एक ओर ससार उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था, अफगानिस्तान के निवासियों ने मूर्खतावश मुल्लाओं के बहकाने में आकर अपने को अज्ञानान्धकार में ही रखना अधिक श्रेयस्कर समझा। बचा सका के ११ महीने के शासन ने अफगानिस्तान को योरप के अन्धकार-युग का एक दुःस्वप्न बना डाला। कितनों को उसने मरवा डाला, कितने घरों को उसने मिट्टी में मिला दिया, इसकी कल्पनामात्र से मस्तिष्क चक्कर खाने लगता है। अमानुल्लाखाँ ने जो कुछ भी अपने देश की उन्नति के लिये कार्य किये थे—स्कूल, अस्पताल, चित्रशाला, भव्य प्रासाद, पुस्तक प्रकाशन आदि—उन सबको उसने मिटा दिया।

प्रकृति के नियमानुसार जो जैसा करता है उसको वैसा ही फल भी भोगने को मिलता है। बचा सक्का और उसके अनेक साथियों को जिन्होंने थोड़े दिनों के प्रभुत्व काल में नृशसता का नग्न नृत्य करके मानवता को कलङ्कित किया था फाँसी के तख्ते पर लटकना पड़ा।

बच्चा सक्का और उसके साथियों को फाँसी दी जा रही है

बचा सक्का
[illegible]

विविध प्राणियों की जिह्वायें

नरेन्द्र वर्मा
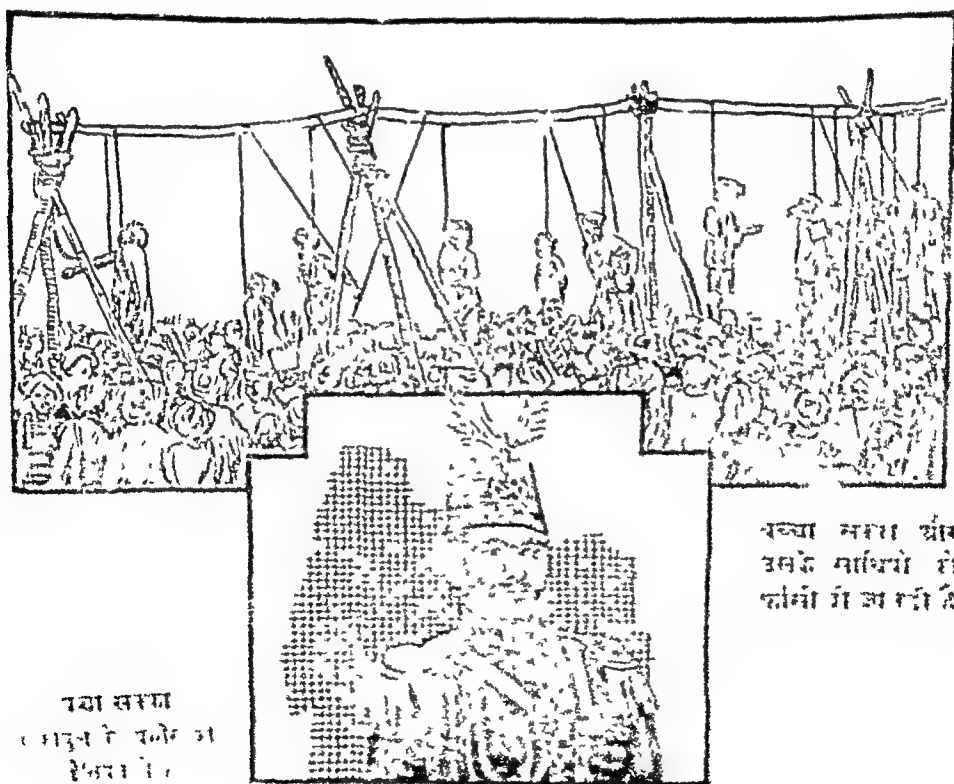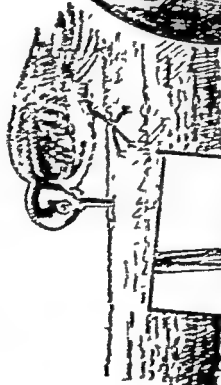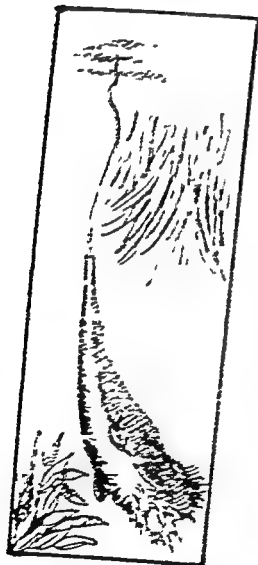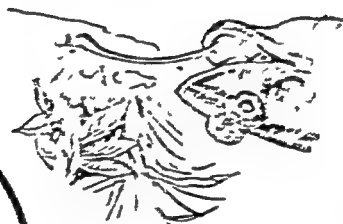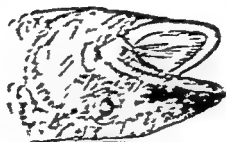
विविध प्रकार की जिह्वाएँ

प्रकृति ने अपने जीवों को विविध प्रकार की जिह्वाएँ दे रखी हैं।

उदाहरणार्थ, हमिङ्ग पक्षी की जिह्वा दुनाली की आकृति की होती है—दो तागे-से साथ-साथ होते हैं और पुष्पों में से रस खींच लेते हैं।

सिंह की जिह्वा ऐसी खुर्दरी होती है कि मनुष्य की खाल को फाड़ डालती है और हड्डियों पर से मांस खुरेच लेती है।

घरेलू बिल्ली की जिह्वा भी बहुत खुर्दरी होती है। तरल पदार्थ पीते समय बिल्ली के बच्चों की जिह्वा सिंह और बाघ की जिह्वाओं की तरह प्याले के आकृति की हो जाती है।

मेंढक की जिह्वा चिपचिपी रबड़ की गुलेल जैसी होती है। इसकी जड़ मुख के अग्रभाग में होती है और शिकार देखते ही धावा बोल देती है। आराम करते समय जीभ गले की ओर रहती है।

खुटबढ़ई की नुकीली जिह्वा सिर में होती है—डाटने-फटकारने के लिये नहीं, प्रत्युत वृक्षों के छेदों में कीड़े-मकोड़ों का शिकार करने के लिये!

चींटी-भक्षक की जिह्वा ८ या ९ इञ्च लम्बी होती है और बहुत ही चिपचिपी जिससे कि वह चींटियों के वासस्थान को नष्ट कर सके और चींटियों को पकड़कर भक्षण कर सके।

जिराफ की जिह्वा बड़े काम की होती है। वह ऊँचे वृक्षों की शाखाओं में लम्बी करके लपेटी जा सकती है और सिकोड़कर छोटी भी की जा सकती है।

अनेक मछलियों के जिह्वा होती ही नहीं। यदि होती भी है तो वह बड़ी अथवा छोटी नहीं की जा सकती।

कहते हैं सर्प अपनी दो जिह्वाओं से सुन सकते हैं। वे स्पन्दनों को शीघ्र ही अनुभव कर लेते हैं।

तोतों की जिह्वाएँ मोटी होती हैं। खाने-पीने में उनसे बहुत सुगमता रहती है।
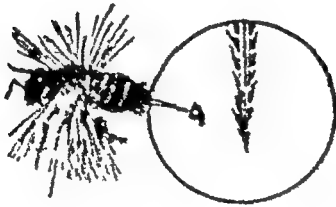
मधुमक्खी और बर्र के डङ्क

डङ्क में काँटे होने के कारण मधुमक्खी केवल एक ही बार डङ्क मार सकती है, और ऐसा करने से वह अपने डङ्क और जीवन दोनों से ही हाथ धो बैठती है। किन्तु बर्र का डङ्क नहीं ऐसा नुकीला और चिकना होता है। इसलिये अनेक बार काम में लाया जाता है।

वृद्ध और रानी मधु-मक्खी

वृद्ध के ६६,००० चक्षु होते हैं क्योंकि कुछ काम नहीं करना पड़ता। और रानी मधुमक्खी के जो निरन्तर काम में व्यस्त रहती है केवल ६,००० ही चक्षु होते हैं। [illegible] की आवश्यकता नहीं है।

शाह दौला का चूहा

पंजाब प्रान्त के गुजरात नगर में शाह दौला का एक मज़ार है। इस मज़ार पर अनेक दम्पति मनौती के लिये आते हैं और वे अपनी पहली संतान को जो प्रायः मूर्ख होती है उस मज़ार पर छोड़ आते हैं। इनकी संख्या आज के दिन सहस्रों की है।

पाँच फ़ीट लम्बा कैंचुआ

[illegible] नगर में कैंचुए बहुत पाये जाते हैं। मछली का शिकार करनेवालों के लिये तो ये आशीर्वाद के तुल्य हैं। एक-एक कैंचुआ पाँच फ़ीट तक का लम्बा पाया जाता है। दिन भर में यदि एक कैंचुआ भी मिल गया, क्योंकि [illegible] काफ़ी [illegible] होती है तो [illegible] हो जाता है।

नरेन्द्र शर्मा
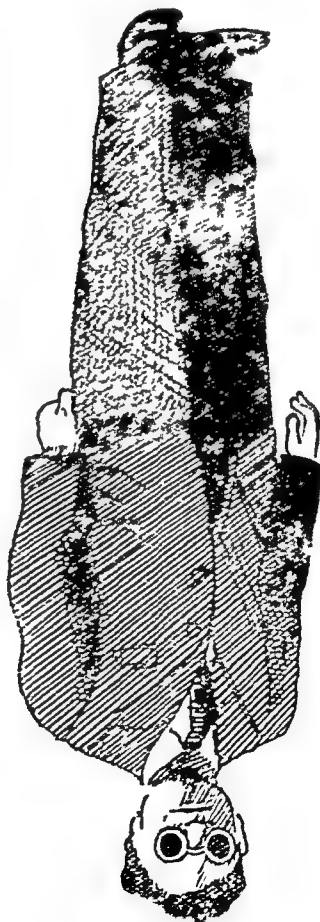
दलाई-लामा

तिब्बत प्रदेश के पुरोहित और शासक को दलाई-लामा कहते हैं। इस शब्द का अर्थ है 'महा-समुद्र' अर्थात् जिसके पास सर्वाधिक ज्ञान और शक्ति हो। अवलोकिता देवी का वह अवतार होता है, ऐसा लामों का विश्वास है। दलाई-लामा का चुनाव विचित्र ढंग से होता है। उसकी खोज की जाती है। दलाई-लामा के देहान्त के समय देश भर में जो भी बालक पैदा होते हैं उनकी विभिन्न प्रकार से परीक्षा की जाती है और जिस बालक में सर्वाधिक गुण अथवा लक्षण दलाई-लामा के पद के योग्य मिल जाते हैं, उसी को वह गौरव पद मिल जाता है। एक विशेष परीक्षा में दिवगत दलाई-लामा की कोई वस्तु अनेक वस्तुओं के साथ मिलाकर रखी जाती है। जो बालक उस वस्तु को चुन लेता है उसी को दलाई-लामा बना लिया जाता है।

१९३३ में दलाई-लामा की मृत्यु हुई थी। खोजते-खोजते १९३९ में एक बालक मिला जो उस सर्वोच्च पद के योग्य है। बालक को बहुत बुद्धिमान् बताया जाता है।

दलाई-लामा की राजधानी पोटाला में है। वहाँ पर अनेक भव्य प्रासाद बने हुए हैं। परलोकगत दलाई-लामा की समाधि भी वहीं है। इस समाधि में अतुल धनराशि भरी हुई है।

तिब्बतियों का धार्मिक विश्वास शैव, शाक्तिनी और बौद्ध मतों पर अवलम्बित है। महर्षि पद्मसम्भव ने सर्वप्रथम तिब्बत पहुँचकर वहाँ की जनता को ज्ञान की दीक्षा दी थी। उन्हीं के नाम का एक मन्त्र है—'ओं मनी पद्म हुँ' जिससे प्रत्येक लामा को दीक्षित किया जाता है। लामे दो प्रकार के होते हैं—(१) लाल टोपीवाले और (२) पीली टोपीवाले। प्रत्येक कुटुम्ब का एक बच्चा अवश्य ही लामा बनाया जाता है।

अनेक तिब्बत-निवासी भारतवर्ष में शिक्षा पा रहे हैं। नई सभ्यता का तिब्बत में प्रवेश हो गया है। [illegible] और रेडियो ने वहाँ की समाज में स्थान कर लिया है। बिजली का प्रकाश भी अनेक स्थानों में दिखाई पड़ रहा है।

भारतवर्ष और चीन के मध्य में स्थित होने के कारण [illegible] लोग तिब्बत को 'बफर' [illegible] मानते हैं।

गणेश के आकृति की मछली

[illegible]

लम्बे नख !

२७ वर्षों में शंघाई के इस चीनी पुजारी ने अपने नख २२½ इञ्च लम्बे बढ़ाये थे।

मस्तक के छेद द्वारा सिगरेट पीना

इस सिपाही का नाम फ्रैंक ब्राउन है। इसके मस्तक में एक बार एक छेद हो गया। वह इस छेद से ही मुँह के स्थान में सिगरेट पीने लगा।

अद्भुत गुणक !

आपका नाम है [illegible]। आप कश्मीर निवासी हैं, और आपकी [illegible] है [illegible] १६ वर्ष के थे। आप [illegible] संख्याओं के गुणन [illegible] में तीन मिनट के भीतर ही ठीक गुणन-फल निकाल देते हैं।

दुम्बारी

पञ्जाबी फ़ौजी फ़कीर

जब दुम्बारी आता है ऐसा प्रतीत होता है कि कोई सार्जेंट मेजर परेड करा रहा है। भारतवर्ष में अनेक फ़कीर हैं पर दुम्बारी का अपना विशेष स्थान है और उस पर भी उसको फ़कीर कहकर सम्बोधन करने में हिचक होती है। वह है फ़कीर, क्योंकि उसके पास फ़कीरी का-सा बाना सदैव रहता है।

परन्तु बाने के अतिरिक्त उसके पास और कोई भी उपकरण फ़कीरी के नहीं हैं।

दुम्बारी दुबला-पतला लम्बे क़द का है। उसकी दाढ़ी एकदम श्वेत है। वृद्ध होने पर भी वह सदैव सीधा तना रहता है और उसकी आँखों में वैसी ही चमक है जैसी कि उसके नवयुवक-शिष्य की आँखों में है।

दुम्बारी को स्वयं नहीं मालूम कि उसकी आयु क्या है। परन्तु गत २० वर्षों में उसकी आकृति में लेशमात्र भी अन्तर नहीं आया है।

दुम्बारी के स्वास्थ्य का रहस्य क्या है? दुम्बारी युवक तो है नहीं। वह सदैव से वृद्ध रहा है। एक नवयुवक दुम्बारी तो कल्पनातीत है। गर्मी, जाड़ा, बरसात—सभी ऋतुओं में दुम्बारी छावनी-छावनी घूमता है और ऑफ़िसरों और सैनिकों से अपनी भिक्षा—वह उसे वेतन कहता है—बटोरता फिरता है।

भिक्षा मिल जाने पर दुम्बारी धन्यवाद नहीं देता। वह अपनी कृतज्ञता दाता को कोई उच्च पद देकर प्रदर्शित करता है। यदि कोई नवआगन्तुक उसे अठन्नी देता है तो तुरन्त ही दुम्बारी कह देता है, "साहब, आप मेजर हो गया है।" दो रुपये मिलने पर कर्नल लार्ड बना दिया जाता है।

दुम्बारी के साथ सदैव एक लकड़ी की तलवार और बन्दूक रहती है। इन हथियारों और उसकी पुरानी वर्दी में भारतवर्ष भर की पल्टनों के बैज लगे हुए हैं। इतने अधिक बैज लगे हैं कि कोट के भारी हो जाने के कारण उसका पहनना असम्भव है। वह उसके [illegible] शिष्य के कन्धों पर टँगा रहता है। नए और पुराने सभी रेजिमेन्टों के बैज और क्रेस्ट दुम्बारी के पास मिलेंगे। १२वें ग्रेनेडियर, ३१वें [illegible] जो १७५८ से १९३३ तक रहे, और १७वीं पैदल पल्टन जो कि १८५८ में बङ्गाल नेटिव इन्फ़ैन्ट्री की तीन पल्टनों में से बच रही थी और १९२१ तक रही, ८३वीं वाला जाह आबाद और ३३वीं [illegible] लाइट इन्फ़ैन्ट्री, अग्निपुरा रेजिमेन्ट, देवली रेजिमेन्ट और मारवाड़ी रेजिमेन्ट—सभी के बैज, क्रेस्ट आदि दुम्बारी के पास सुरक्षित हैं। एक बड़े टीन के गोल डिब्बे में उसके पास सैकड़ों ही पत्र और सार्टीफ़िकेट हैं। इनमें से अनेक लेखक तो फ़ील्ड मार्शल बन गए हैं; कुछ ख्याति प्राप्त कर रहे हैं; बहुत-से साधारण सिपाही ही बने रहे और अ[illegible] बैकुण्ठ सिधार चुके हैं। इन सबकी स्मृति दुम्बारी के पास सुरक्षित है।

एक दिन अवश्य ही ऐसा आयगा जब दुम्बारी अपनी तलवार, बन्दूक और वर्दी उतार देगा। उस दिन दुम्बारी के द्वारा जो अनेक पल्टनों से सम्बन्ध-सा है टूट जायगा और दुम्बारी को भी सब भूल जायँगे। अच्छा हो कि उसका सब सामान [illegible] के अजायबघर में सुरक्षित रहे।

दुम्बारी अब तक उसी के कथनानुसार दो लाख रुपये पेन्शन के रूप में पा चुका है।

[illegible] में एक भी छावनी ऐसी नहीं जहाँ दुम्बारी को कोई न जानता हो।

मनुष्य टेढ़ा-मेढ़ा रास्ता अब नहीं पसन्द करता—वह एकदम सीधी सड़कें चाहता है !

यदि उसके रास्ते में पहाड़ की दीवार जैसी कोई बड़ी आड़ आ जावे तो भी वह उसे फोड़कर—उसमें सुरंग बनाकर—ही आगे बढ़ेगा। उसका चक्कर काटने को वह तैयार नहीं। ऊपर के चित्र में अमेरिका के एक विशाल वृक्ष के भीमकाय तने में काटी गई एक सुरंग का दृश्य है। यह वृक्ष उस ओर निकलनेवाले एक रास्ते की आड़ में पड़ता था। वृक्ष भी बना रहे और गाड़ी-घोड़ों को रास्ते से मुड़ना भी न पड़े, इन दोनों बातों को करने के लिए किसी बुद्धिमान् व्यक्ति ने इसके तने को काटकर मोटर जाने भर का रास्ता निकाल लिया।

नेड — आयु ९६ वर्ष | ईनोक — आयु ९४ वर्ष | सैम — आयु ९१ वर्ष | उच — आयु ८२ वर्ष | जो — आयु ७९ वर्ष

इन पाँच भ्राताओं की अवस्थाओं का [illegible] वर्ष है।

अद्भुत त्रिकोण

इस त्रिकोण की भुजायें एकदम सीधी हैं, किन्तु चक्षुओं को वह बीच में झुकी हुई दिखाई पड़ रही हैं।

आँखमिचौनी खेलनेवाली छायाएँ

जिन स्थलों पर श्वेत पट्टियाँ एक दूसरे को काटती हैं वहीं पर छायाएँ दीख पड़ती हैं। सीधी दृष्टि देखने पर वे अन्तर्धान हो जाती हैं। तिर्यक् दृष्टि देखने पर वे फिर स्पष्ट हो जाती हैं।

दृष्टि के लिये एक आश्चर्य

इस बाइसिकिल के पहियों को घूमते हुए देखने के लिए इस पृष्ठ को थोड़ा घुमा दो, फिर देखने पर पहिये घूमते हुए दीखेंगे।

लुढ़कनेवाली गेंद

[illegible]
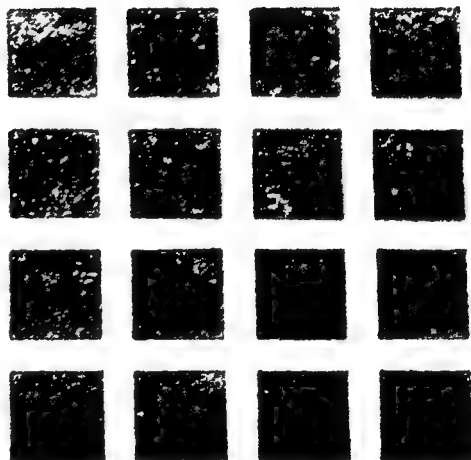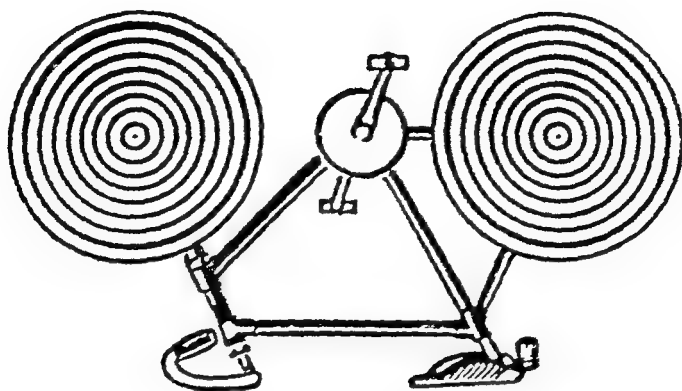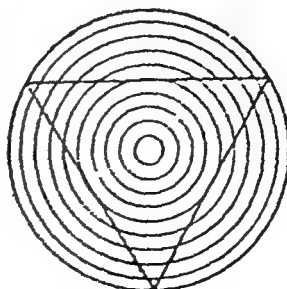
को हिला-डुलाकर ऊपर चढ़ और उतर जाता है। गेंद का भीतरी भाग पूर्णतया खोखला होता है। लुढ़कता हुआ मनुष्य ऊपर पहुँचता है और फिर ऊपर से बड़े वेग के साथ नीचे लुढ़क आता है। गेंद में अनेक छोटे-छोटे छेद होने के कारण श्वास लेने में सुगमता रहती है। दर्शकों को इस खेल में कदाचित् कोई विचित्रता अथवा विलक्षणता न हो किन्तु सत्य तो यह है कि इस खेल में अत्यधिक परिश्रम और पटुता अपेक्षित है।

सुगन्ध-चित्र

संसार के इतिहास में प्रथम बार सुगन्ध का चित्र लिया गया है। फ्रांसीसी वैज्ञानिक हेनरी देनौ ने बड़े कुशल ढङ्ग से विधिपूर्वक पाटल और कमल की सुगंधों का चित्र लेकर यह सिद्ध कर दिया है कि सुगन्ध की भी आकृति होती है और वह केवल हवा या गैस ही नहीं है। बहुत ही थोड़ी मात्रा में सुगन्ध लेकर चित्र लिया जाता है। एक शीशे को लटकाकर उसके नीचे के भाग में फूल की पत्ती चिपका दी जाती है, और इसके नीचे थोड़ी ही दूरी पर पारा रहता है जिस पर एक चूर्ण का अस्तर लगा रहता है। फूल से निकलकर सुगन्ध चूर्ण को हटाकर पारे पर जमा हो जाती है और फिर उसका चित्र सुगमतापूर्वक खींच लिया जाता है। एक मिनट से लेकर दस मिनट तक चित्र स्पष्ट देखा जा सकता है और फिर पारे में फूल की पत्ती को रखकर अधिक देर तक भी देख सकते हैं। इस प्रकार सुगन्ध-युक्त फूलों का चित्र लिया जा सकता है। जिन फूलों में सुगन्ध नहीं होती उनका कोई चित्र नहीं होता।

भौंरे की आँख द्वारा देखने पर

कैमरे में एक भौंरे की आँख लगा दी गई थी और उसके द्वारा एक मनुष्य की फोटो ली गई। भौंरे की आँख में ६ सहस्र लैन्स् होते हैं। फलस्वरूप यह चित्र उतरा।

उपगढ़ का प्रकाश-गृह

फ़ोटोग्राफ़र का साहस

उसगढ़ का प्रकाश-स्तम्भ

फ़ोटोग्राफ़र का साहस

नरेन्द्र शर्मा

जयगढ़ का प्रकाश-गृह—सन् १६३३ ई० में दक्षिण भारत में रत्नगिरि से २४ मील की दूरी पर जयगढ़ नामक स्थान में इस प्रकाश-गृह का उद्घाटन हुआ था। इसका प्रकाश ४ लाख ६० हज़ार मोमवत्तियों के प्रकाश के बराबर है और १७ मील की दूरी से दिखाई पड़ता है।

फोटोग्राफ़र का साहस—न्यूयॉर्क-निवासी एल मिङ्गलोन ने एक दिन आकाश से विशेष फोटो लेने का विचार किया। इसने बहुत से गुब्बारे इकट्ठे किये, उनमें गैस भरी, और उन सबको एक रस्सी में बाँधकर रस्सी को अपनी कमर से बाँध लिया। तदुपरान्त एक लम्बी रस्सी का एक सिरा अपने पैरों से बाँधकर दूसरे सिरे को किसी खूँटे से बाँध दिया। जब वह उठने लगा आकस्मात् खूँटेवाली रस्सी टूट गई और वह उड़ चला। पादरी मुलन उसे उस दशा में देखकर दौड़े। अपनी बन्दूक से गुब्बारों में ताक-ताककर निशाने लगाये और सफल हुए। मिङ्गलोन सकुशल पृथ्वी पर आ गया। वह घबराया हुआ था।

एक कुत्ते की शक्ति से चलनेवाली गाड़ी

यह अपने ढङ्ग की निराली गाड़ी महाशय विग्ज ने जो बहुत काल तक कुत्तों के शिक्षक रह चुके हैं बनाई है। यह गाड़ी गिलहरी के पिंजड़े के सिद्धान्त पर बनी है। बीच में एक विशाल पहिया रहता है जो कि कुत्ते के उसके भीतर चलने या दौड़ने से घूमता है। कुत्ते को एक विशेष पट्टा पहनाकर पहिये के बीच में एक डंडे से बाँध दिया जाता है। पिछले पहियों को चलाने के लिये पेटियों और गिर्री की आकृति के यन्त्रों से काम लिया जाता है और इन पर ड्राइवर का पीछे के डंडों को उठानेवाले लीवर द्वारा पूर्ण अधिकार रहता है।

सॉंकलवाला

न्यूगिनी का सरदार

कंगाल

बतख ?
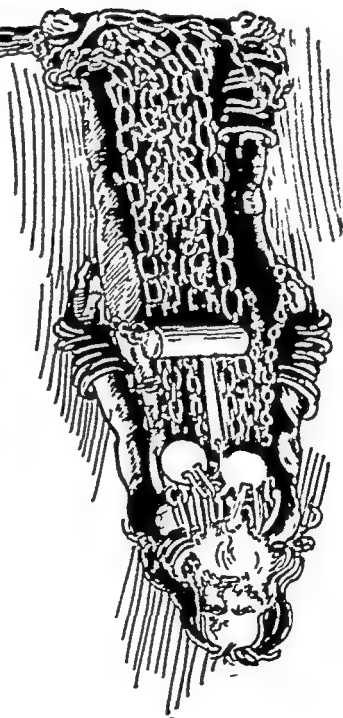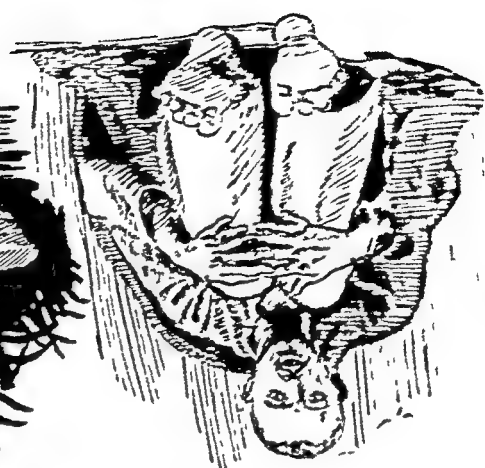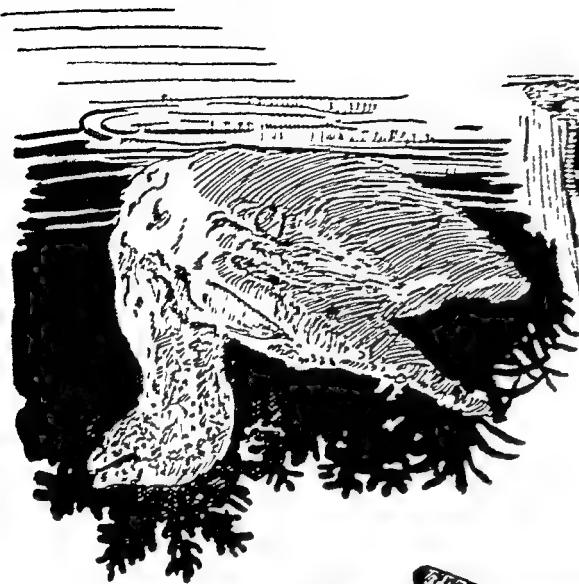
दिन में कोई भय नहीं—शिकारियों का कथन है कि बनैले घोड़ों (zebra), हिरणों और अन्य पशुओं को दिन में शेर से किंचित् भी भय नहीं लगता। शेर को आते देखकर वे केवल उसके लिये एक मार्ग बना देते हैं।

बगुला और सारस—बगुला अपनी गर्दन को पीछे की ओर मोड़कर और शिर को अपने दोनों कन्धों के मध्य में करके उड़ता है। सारस अपनी गर्दन को लम्बायमान करके उड़ता है। और दोनों ही टाँगें पीछे की ओर करके उड़ते हैं। पुनश्च, बगुला अपना घोंसला लकड़ियों के टुकड़ों का बनाता है और सारस पृथ्वी के ऊपर घास का।

बया भी अपने घोंसले में दीप जलाती है !—बया (पक्षी विशेष) अपने घोंसलों को, जिनके द्वार मिट्टी के होते हैं, जुगनुओं द्वारा प्रकाशमान रखती है।

दस लाख का पगोडा (मन्दिर)

हरिताम्बर (green jade) के एक ही टुकड़े में से नक्काशी करके बनाया गया यह पगोडा विश्व की एक सर्वश्रेष्ठ और बहुमूल्य कला की वस्तु है। यह ऊँचाई में केवल चार फीट पाँच इंच है और इसका मूल्य है दस लाख डॉलर, लगभग तीस लाख रुपये।

सुदूर पूर्व के देशों, चीन, बर्मा, स्याम, जापान आदि में इसी नमूने के अनेक पगोडा हैं।

छोटे माप पर बनाये गये सोने, चाँदी, संगमरमर आदि के पगोडा पश्चिमी देशों में बहुत अधिक मूल्य में बिकते हैं। और यदि एक समूचा पगोडा पर्याप्त ऊँचाई का किसी एक ही बहुमूल्य पत्थर में से बनाया जाय, उसका मूल्यांकन करना असम्भव नहीं तो अत्यन्त कठिन अवश्य है। सोलहवीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने सर्वप्रथम इस शब्द को भारत में प्रचलित किया था। और यह फारसी के 'बुतकदे' का अपभ्रंश रूप है।

पूर्वकाल में दक्षिण भारत के स्वर्ण के सिक्के को पगोडा कहते थे।

दस लाख का पगोडा (मन्दिर)

अग्निभक्षक

यह मनुष्य जलते हुए कोयले अपने मुख के अन्दर तीन मिनट तक रखे रहता है !

सर्पभक्षी

यह मनुष्य [illegible] से विषैले सर्पों को जीवित [illegible] खा लेता है।

नम्बूद्री भ्राता

यह दोनों भाई मङ्गलोर के नम्बूद्री ब्राह्मण हैं। जो देखने में छोटा है, वही आयु में बड़ा है। अवस्था है २६ वर्ष और लम्बाई है २ फीट ६ इञ्च। तोल है केवल ११ सेर। आपकी वृत्ति है ज्योतिष और वैद्यक।
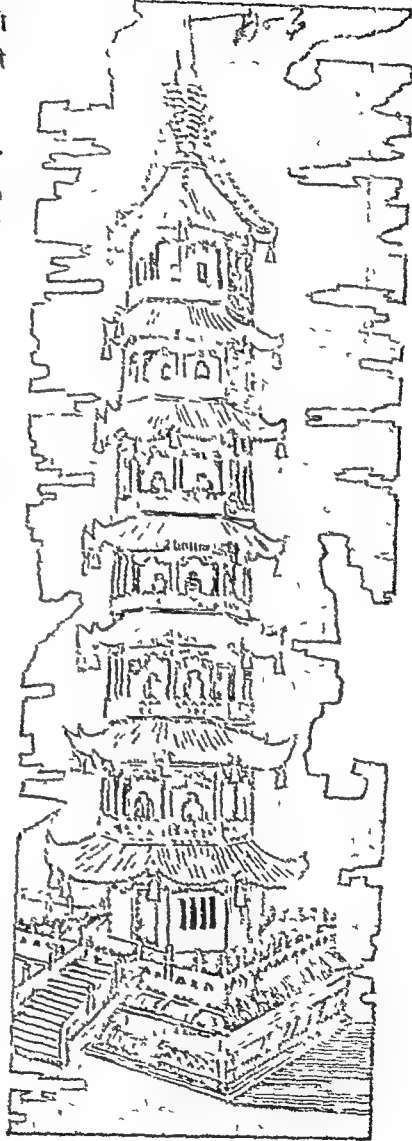
विचित्र चिड़ियाखाना

नेब्रास्का (अमरीका) के श्रीयुत प्रुचा ने अपने पुष्पोद्यान को एक चिड़ियाख़ाना बना डाला है। तीन-चार वर्षों के अन्दर ही वृक्षों की पत्तियों और शाखाओं को काट-छाँटकर अनेक प्रकार के पशुओं की आकृतियाँ बना डाली हैं। इस पुष्पोद्यान के द्वार पर एक वृक्ष इस प्रकार छाँटा गया है कि एक अश्वारोही की आकृति बन गई है। एक वृक्ष देखने से जान पड़ता है, मानो उस पर मोर बैठा है। चित्र को ध्यानपूर्वक देखने से अनेक पशु-पक्षियों की आकृतियों का पता लग जायगा।

यह चिड़ियाख़ाना संसार भर में अद्वितीय है और बाग़बानी की कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

जिराफ़ की-सी गर्दनवाली महिला

यह पडौङ्ग की बर्मी महिला है। इनको क्याङ्गङ् कहकर भी सम्बोधन करते हैं। यह अपनी गर्दन में पीतल के कॉलर पहनती हैं, जिससे इनकी गर्दन जिराफ़ की जैसी हो जाती है। ऐसी गर्दन सुन्दर समझी जाती है। कभी-कभी यह गर्दनें चौदह-चौदह पन्द्रह-पन्द्रह इञ्च लम्बी होती हैं।

साधारणतया २१ कॉलर पहनने की प्रथा है। २५ या इससे अधिक कॉलर भी पहने गये हैं।
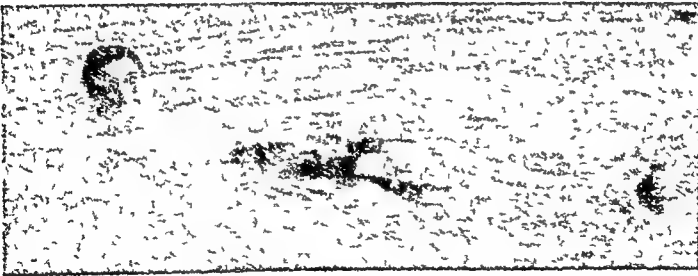
मृत सागर में डूबना असम्भव है

मृत सागर (Dead Sea) में भारी से भारी बदनवाला आदमी भी बिना प्रयोग तैरता रहता है।

पांच बहिनें जिनका जन्म एक साथ हुआ !

बुढ़िया से बालिका !

कल्पना करो कि तुम बूढ़े हो और शनैः-शनैः प्रौढ़ावस्था से युवावस्था की ओर और फिर बालकपन की ओर लौट रहे हो। तुम्हें कितना आश्चर्य होगा ! परन्तु यदि यह कल्पना वास्तविकता हो जाय, तब तो यह अद्भुत बात ही होगी !

अमरीका में वैज्ञानिकों के सामने हाल ही में एक ऐसी ही विचित्र समस्या उपस्थित की गई थी जिसने उनको चक्कर में डाल दिया और जिसका वे कोई भी कारण न अनुसंधान सके। एक वृद्ध महिला अकस्मात् ही अपने अतीत की ओर लौटने लगी। अर्थात् उसका मानसिक दृष्टिकोण प्रतिदिन अल्पायुवालों जैसा होने लगा।

द्रुत-वेग से वह प्रौढ़ा बन गई, नवयुवती बन गई, लड़कियों की तरह प्रेम कहानियाँ सुन-पढ़कर मुँह दबाकर हँसने लग गई ! यदि कोई नवयुवक उसे देख लेता तो शीघ्र ही लजा जाती !

तत्पश्चात् उसने बालकों की पुस्तकें पढ़ना प्रारम्भ किया और खिलौनों से खेलना भी। यद्यपि शरीर उसका बुढ़ों-जैसा ही था, वह अपने हाथों और घुटनों के बल घूमा-फिरा करती, अपनी उँगलियाँ पपोरा करती और बच्चों की तरह तुतलाया करती। अन्त में वह उस स्थिति में पड़ी रहती जिसमें छोटे बच्चे पड़े रहते हैं ! तदुपरान्त उसने अपने शरीर को त्याग दिया।

ऐसे ही विचित्र और भी अनेक उदाहरण हैं। कदाचित् सबसे अधिक प्रसिद्ध है टैरेजे न्यूमन की कथा। इस ३६ वर्षीया जर्मन किसान महिला के हाथों, पाँवों और बगल में वैसे ही व्रण हैं जैसे ईसा के थे और वे किसी प्रकार भी अच्छे नहीं होते।

१५ वर्षों से उसने कुछ नहीं खाया है। दस वर्षों से उसने कुछ भी नहीं पिया है। वह औरों के कष्टों को अपने ऊपर ले लेती है और वह कभी २५ वर्ष से अधिक की नहीं जँचती। वैज्ञानिकों ने बहुत छानबीन की कि कहीं धोखा या छल न हो परन्तु ऐसी कोई बात उन्हें न मिली। निस्सन्देह वह एक 'अद्भुत' महिला है।

एक दूसरा विचित्र उदाहरण अमरीका की जोआकिन विएना का है। सात वर्ष पूर्व उसकी लम्बाई ५ फीट ४ इञ्च थी। अब है ४ फीट १० इञ्च और वह छोटा ही होता जा रहा है। उसके शरीर का अनुपात ठीक है अर्थात् उसके शरीर के सभी अङ्ग एक समान घटे हैं। वैज्ञानिक असहाय की भाँति साश्चर्य देखते रहते हैं कि वह कितना और घटेगा !

एक गाड़ीवान की भी ऐसी ही कथा है। उसको सब औंधा पुरुष (Upside-down Man) कहते हैं। उसके शरीर के भीतरी अङ्ग सब उलटी ओर को हैं। उसका 'हृदय' दूसरी (wrong side में) ओर है। इस पर भी वह स्वास्थ्य की दृष्टि से पूर्ण हृष्ट-पुष्ट है और एक दिन को भी कभी बीमार नहीं पड़ा है।

अनेक मनुष्य ऐसे देखे गये हैं जिनकी खाँसी कभी बन्द नहीं होती और वे खाँसते-खाँसते ही यमलोक सिधार जाते हैं। यह भी अक्षरशः पूर्ण सत्य है कि हँसते-हँसते कितने ही मनुष्यों ने अपने प्राण त्याग दिये हैं ! किन्तु फ्लोरिडा के एक कृषक, श्रीयुत हॉवर्ड स्टिलमैन, का एक अद्वितीय उदाहरण है, जिसने कि अपने आपसे बातें करते-करते स्वर्ग की राह ली ! अपनी नींद में भी ४१८ घंटों तक वह निरतर बातें करता रहा ! समय बीत गया और वह दुर्बल होता गया और ज्वर भी उत्तरोत्तर बढ़ता गया, परन्तु किसी प्रकार भी बातें करना बन्द न हुआ। मृत्यु ने ही १८ दिनों के पश्चात् उसका मुख बन्द किया !

रूमानिया में एक ऐसा मनुष्य है, जो १६ वर्षों से नहीं सोया है। इसका नाम है कैरोल ग्रेन। एक बम के लगने से वह अचेत हो गया था। तभी से बस उसे नींद नहीं आती।

इसके विरुद्ध कैनेडा निवासी श्रीयुत जोजेफ लैङ्कन का उदाहरण है। इसकी आयु है ३० वर्ष की। सन् १९३५ ई० में एक दिन मार्च मास में उसकी आँख लगी और जून सन् १९३६ ई० में उसने आँखें खोलीं !

[जुलाई १९३९ की मानचेस्टर साइंस से]

विष में गैंडे का चूर्ण डालने से प्याले के बाहरी भाग में पसीने की-सी बूँदें बन जाती थीं। वैज्ञानिकों ने अब इसको असत्य प्रमाणित कर दिया है।

जब भय निकट होता है तो ये पक्षी ज़ोरों से चहचहाकर और पङ्ख फड़फड़ाकर सोते हुए गैंडे को सचेत कर देते हैं।
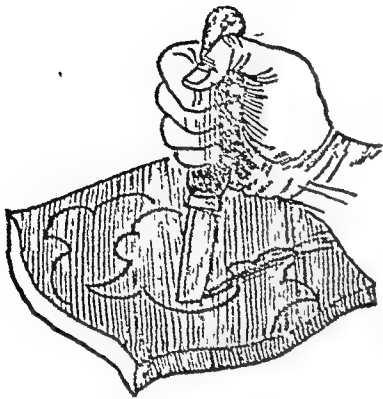
गैंडे की खाल पर बेल-बूटे

गैंडे की मोटी खाल दुर्भेद्य नहीं होती। नवीन खाल पनीर जैसी कोमल होती है और उस पर सरलतापूर्वक बेल-बूटे बनाये जा सकते हैं।
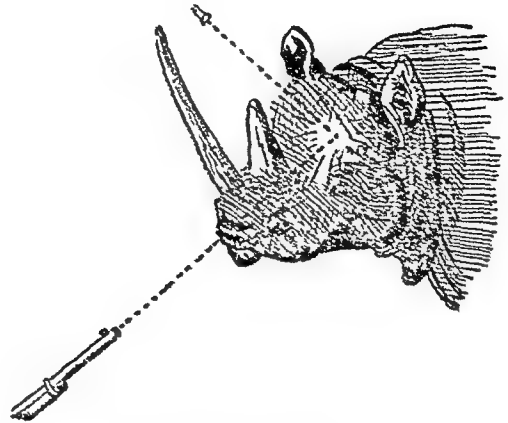
गैंडे की दुर्भेद्य खोपड़ी

गैंडे की खोपड़ी पर से बन्दूक़ की गोली उचट जाती है!
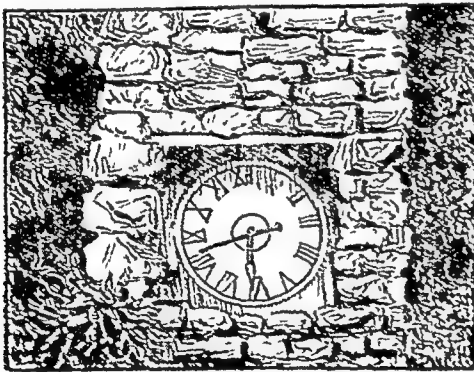
विचित्र घड़ी

हेग (न्यूयॉर्क) में एक ज़मींदार की रियासत के द्वार पर लगी हुई यह घड़ी बारहों महीने ठीक समय बताती है। धूप और पाले का इस पर कोई असर नहीं होता। इसको तेल द्वारा विशेष प्रकार से साफ़ रक्खा जाता है।

बेदुम की बिल्ली

इस मैंक्स बिल्ली के दुम के स्थान पर एक छोटा केशों का गुच्छा होता है।

विचित्र चिड़ियाखाना
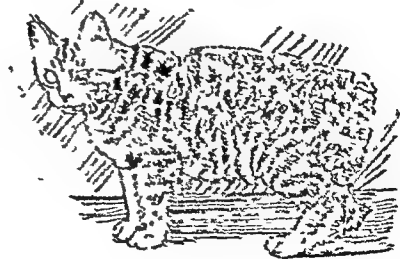
साँकलवाला—यह फ़क़ीर १३ वर्षों तक इन ८।। मन की साँकलों को लादे लाहौर की सड़कों पर घूमता फिरता था।

न्यूगिनी का सरदार—न्यूगिनी को आस्ट्रेलिया का प्रवेश-द्वार कहते हैं। यहाँ सोने की बहुमूल्य खानें हैं। वहाँ के आदिम निवासियों के सरदार का यह ताज कैसा दर्शनीय है!

छंगालाल—इन महाशय के बारह उँगलियाँ हाथ में हैं और बारह पाँवों में। कहा जाता है कि ऐसा पुरुष बड़ा भाग्यशाली होता है।

बतख़ ?—नहीं, यह बतख़ नहीं है, यह पपीता नाम का फल है। गर्दन, मुख, आँखें, डैने सब बतख़ के से बने हैं!

योगी हरिदास

लाहौर की सन् १८३७ ई० की घटना है। राजा रणजीतसिंह की उपस्थिति में योगी हरिदास को दोहरे पटवाले एक काठ के सन्दूक़ में बन्द किया गया। तदुपरान्त उसमें ताला लगाया गया, मुहर लगाई गई और उसको एक उद्यान के मध्य में स्थित एक निर्जन घर के तयख़ाने में दफन कर दिया गया। उद्यान के फाटक को ईंटों से चुन दिया गया और रात-दिन निरन्तर सन्तरी पहरा देने लगे। चालीस दिन के पश्चात् राजा रणजीतसिंह, अँग्रेज़ जनरल वेंचूरा, कप्तान वारोल और डाक्टर मैक्ग्रिगर की उपस्थिति में सन्दूक़ निकाला गया और उसमें से योगी के शरीर को बाहर निकालकर रक्खा गया। गर्म पानी के छींटे उसके सिर पर डाले गये और योगी ने एक गहरी श्वास ली। उसकी नासिका में से मोम की डाट निकाली गई। योगी धीरे-धीरे होश में आने लगा। उसका स्वास्थ्य ज्यों-का-त्यों था। डाक्टर मैक्ग्रिगर ने नाड़ी देखी, बिल्कुल बन्द थी, यद्यपि तापक्रम सामान्य था।

नटों की कला

नटों की कला—६४ कलाओं में से नटकला भी एक है। प्रायः फ़सल बोने के पहले वर्षा ऋतु के आरम्भ में भारत के प्रत्येक नगर तथा ग्राम में नटकला का प्रदर्शन होता है। सामने के चित्र में बाँसों के ऊपर वे अपनी कला दिखा रहे हैं। बाईं ओर के चित्र में नट के सिर पर पाँच घड़े रखे हैं और वह बाँस के ऊपर बैठकर तुरही बजा रहा है। उसके सामनेवाला व्यक्ति दूसरे बाँस पर अपने शरीर को सतुलन कर पाँच घड़ों को सिर पर रखे और हाथ फैलाये फिरकनी-सा फिर रहा है। आश्चर्य का अवसर तब आता है जबकि घड़ों को एक-एक कर नट दूसरे व्यक्ति को दे देता है और सिर के बल बाँस से नीचे उतर आता है।

जब तक नट ऊपर अपनी कला दिखाता रहता है, नीचे ढुलकिया अपनी ढोलक बजाता रहता है और होनेवाले करतब की सूचना दर्शकों को देता रहता है।

पूर्वकाल में ज़मींदार इन नटों के सरक्षक होते थे। वे नटों को निर्वाह के लिये ज़मीन देते थे। ग्रामीण जनता में यह विश्वास जड़ पकड़ गया था कि जितने लम्बे बाँस पर नट करतब दिखायेंगे, उतने ही लम्बे उनके खेत के पौधों के डॉठल होंगे और खूब पैदावार होगी।

अद्भुत नृत्य—मध्य के चित्र में खड़े हुए आदमी के सिर पर दो गट्टे एक-दूसरे के ऊपर रखे हैं, उनके ऊपर औंधा घड़ा रख दिया गया है और घड़े के ऊपर एक और आदमी खड़ा है। यह सब करने के पश्चात् नीचे खड़ा हुआ आदमी अपनी संतुलन कला की चरम सीमा दिखाने के लिये नाच भी रहा है। इतना ही बस नहीं है। नृत्य ढोल की तान पर हो रहा है।

यह शेर का बच्चा—दो महीने की शिक्षा के उपरान्त [illegible]

इस लड़के को केवल रात्रि में ही दिखाई देता है!

इस लड़के का नाम है गिओवानी गानान्ती। जब वह इटली से अमरीका गया तो डाक्टरों ने इसे उस देश में प्रवेश करने की आज्ञा नहीं दी, क्योंकि इसको एक चक्षु रोग था जिसके कारण इसे दिन में दिखाई नहीं देता था और रात्रि में भली भाँति।

संसार भर के वृक्षों में सबसे ऊँचा।

संसार भर के वृक्षों में सबसे ऊँचा वृक्ष राइडरवुड, वाशिङ्गटन, में है। इसका नाम है डगलस फ़र और इसकी ऊँचाई है ३२५ फीट।

टोकरीवाला जिम

यह टोकरीवाला लन्दन की भीड़ों में होकर अपने सिर पर बीस-बीस टोकरियाँ रखकर ले जाता है।
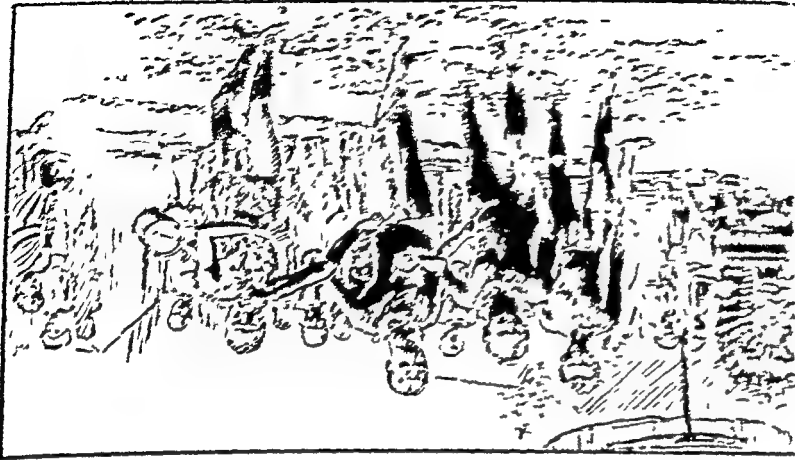
खुदाबख्श जलती हुई आग पर चल रहा है।

डाक्टर खुदाबख्श के पैरों की परीक्षा कर रहा है।

जलती हुई आग पर नङ्गा पांव रखा है।

चार मनुष्य दहकते हुए कोयलों पर चल रहे हैं।
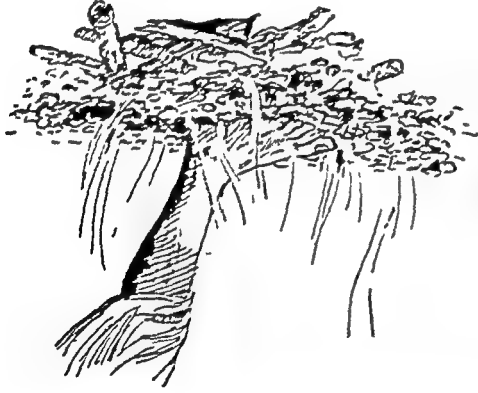
खुदाबख्श जलती हुई आग पर चल रहा है।

भारतीय खुदाबख्श ने जलती हुई अग्नि पर चलकर अँग्रेज़ो को केवल आश्चर्य में ही नहीं डाल दिया प्रत्युत् स्तम्भित भी कर दिया। उसका कथन है कि वह अपने धर्म के प्रति विशेष श्रद्धा रखता है और इसी कारण वह ऐसा दुस्साहस कर सकता है।

डाक्टर खुदाबख्श के पैरो की परीक्षा कर रहा है।

अँग्रेज डाक्टर देख रहा है कि कहीं खुदाबख्श ने अपने पैर के तलवो मे कोई ऐसी वस्तु तो नहीं लगा ली है, जिससे कि उन पर जलती हुई अग्नि कोई प्रभाव ही न डाल सके। परीक्षा द्वारा उसे ज्ञात हो गया है कि साधारण मनुष्य के जैसे ही खुदाबख्श के भी पॉव हैं।

जलती हुई अग्नि पर नङ्गा पॉव रखा है।

इस चित्र मे अग्नि मे से लपटे निकलती हुई दिखाई गई हैं। अग्नि बहुत ही प्रचण्ड है।

चार मनुष्य दहकते हुए कोयलो पर चल रहे हैं।

मद्रास मे एक भीड़ के सम्मुख चार आदमी ढोलक की तान पर दहकते हुए कोयलो पर चल रहे हैं।

विकट सूर्योपासक

यह साधु काशी मे दशाश्वमेध घाट पर नित्यप्रति सूर्योदय से सूर्यास्त तक १५ वर्षों तक बिना हिलेडुले जैसा चित्र मे दिखाया गया है उसी स्थिति मे सूर्य्य की ओर टकटकी लगाये देखता रहता था। ऐसा करने से उसकी ऑखों की ज्योति जाती रही। बैठे-बैठे उसकी टॉगे सूखकर लकड़ी हो गई थीं, इसलिए उसके भाई उसके परिचित स्थान पर आकर बिठा जाते थे।

दाढ़ीवाला घोड़ा

अमरीका के रोजलैण्ड नामक गॉव के एक ग्वालिये का यह घोड़ा है। इस घोड़े के दाढ़ी है। इसका स्वामी इसे दूध की गाड़ी मे जोत-कर ले जाता है, और समय-समय पर इसकी दाढ़ी को मेड़वा देता है, अन्यथा बाज़ार मे एक तमाशा लग जाता है।

विश्व नर्त्तक चन्द्रकाली

चन्द्रकाली की माँ एक हिन्दू नर्त्तकी थी और पिता एक फ्रांसीसी। पिता की मृत्यु के पश्चात उसकी माता ने अपने पुत्र और दो पुत्रियो का पालन-पोषण नृत्य द्वारा किया। वह योरुप, एशिया और अमरीका के प्रत्येक देश मे नाची और जहाँ-जहाँ गई बालक चन्द्र को भी अपने साथ ले गई। बालक चन्द्र भी नाचता था और विभिन्न प्रदेशो के नृत्य भी सीखता जाता था।

चन्द्रकाली ने नृत्य का खूब अभ्यास किया और पूर्ण सफलता प्राप्त की। उसने योरुप के नरेशों के सामने अपना नृत्य-प्रदर्शन किया। यद्यपि उनमें से अनेको नरेश अपने-अपने राज्य से हाथ धो बैठे है, चन्द्रकाली अद्यापि नृत्य-प्रदर्शन करता हुआ भ्रमण कर रहा है। अनेको का ऐसा मत है कि वह विश्व का सर्वश्रेष्ठ नर्त्तक है—निजिन्सकी से भी बढकर। चन्द्रकाली ने कभी किसी नृत्यशाला मे शिक्षा नही पाई। नाचना उसके लिये उतना ही स्वाभाविक रहा है, जैसे पक्षियो के लिये उडना, पुष्पो के लिये खिलना और सरिताओ के लिये बहते रहना। चन्द्रकाली की ही तरह एक अमरीकन नर्त्तकी और हो गई है, जिसने भी कभी किसी से नृत्यकला नही सीखी और जिसने अमरीका और योरुप को अपने नृत्य से मुग्ध कर दिया था। उसका नाम था ईसाडोरा डकन।

जिनको अन्तर्प्रेरणा होती है वे स्वय ही अपने को सब कुछ सिखा लेते हैं। उन्हे किसी विश्वविद्यालय मे पढने की आवश्यकता नही होती। जो जीवन के सच्चे अर्थ समझते हैं, उनके निकट उनकी कला, उनका काम, उनका सर्वश्रेष्ठ गुरु होता है और ऐसे ही व्यक्ति आनन्द के, मुक्ति के, पूर्ण अधिकारी होते हैं। वे जीवन-मुक्त होते हैं।
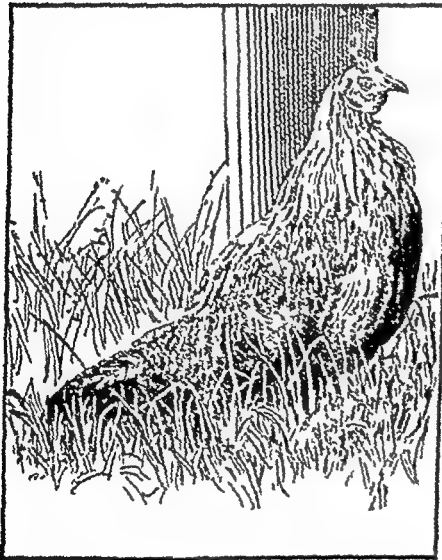
मुर्गी से मुर्गा

१६३७ ई० की बात है। लन्दन के जू (चिड़ियाघर) में एक जङ्गली मुर्गी मुर्गा हो गई। उसकी गर्दन पर न केवल नर के जैसे पर ही निकल आये, वरन् एक छोटी-सी कलँगी भी। वैज्ञानिकों के लिए यह एक समस्या है, जिसका वे अभी तक कोई हल नहीं खोज पाये हैं।

मादा दीमक (श्वेत चींटी) एक दिन में एक करोड़ अण्डे देती है!

मनुष्य के सिर का फुटबॉल ?

सींगवाला मनुष्य

सिकुड़ा हुआ मनुष्य का सिर

[illegible] नारी

मनुष्य की खोपड़ी से फुटबॉल ?—अफ्रीका की दो जातियों में कुछ मतभेद था। यह निश्चय पाया गया कि दोनों पक्ष फुटबॉल खेलें। जो जीत जाय उसी की बात मानी जाय। एक फुटबॉल की खोज हुई। जब वह न मिली तो मनुष्य की खोपड़ी से ही फुटबॉल खेली गई।

सींगवाला मनुष्य—यह अफ्रीका की काफिर जाति का सींगवाला मनुष्य है। डाक्टरों का कहना है कि यह सींग एक चर्मरोग के कारण निकल आते हैं। पशु और मनुष्य के सींग में यह अन्तर है कि मनुष्य के सींग में हड्डी नहीं होती, यह केवल चर्म-वृद्धि मात्र है। यह सींग मनुष्य के शरीर में कहीं भी निकल आ सकता है।

सिकुड़ा हुआ मनुष्य का सिर—दक्षिणी अमरीका के पीरू के जङ्गल में जिवारो (Jivaro) जाति के मनुष्य का यह सिर है। अपने वैरी को मारकार जिवारो उसके सिर को विशेष विधि से सिकोड़ लेते हैं। इस प्रकार के सिर अनेक यात्री बहुत मूल्य देकर ख़रीद लेते हैं और अपने घरों की शोभा (?) बढ़ाते हैं। विधान द्वारा यह प्रथा बन्द कर दी गई है। परन्तु अब भी ऐसे सिर बेचे और खरीदे जाते हैं। न्यूयॉर्क के अमरीकन-इण्डियन म्यूजियम में दो सिर सुरक्षित हैं।

सत्रह वर्षीया नानी—अफ्रीका के कलाबार द्वीप के सरदार अक्कीरी की यह प्रिय पत्नी है। जब इसकी आयु ८ वर्ष ४ मास की थी, इसके एक पुत्री हुई थी और जब यह पुत्री ८ वर्ष की हुई तो उसके भी एक बच्चा हुआ।

सुन्दर होंठ ?

मध्यवर्त्ती अफ्रीका की सारस जिंगी जाति की इस युवती के होंठ विशेष विधि से इतने बड़े किये गये हैं। चार वर्ष की आयु की लड़की का भावी पति अपनी अबोध पत्नी के ऊपर-नीचे के दोनों होंठों में चाकू से छेदकर उनमें लकड़ी पिरो देता है। आयुवृद्धि के साथ-साथ लकड़ी भी बड़ी कर दी जाती है। पूर्ण युवती होने तक होंठ ख़ूब बड़े हो जाते हैं। रात्रि में अपने पति के कन्धों पर अपने होंठों को रखकर वह सो जाती है, जिससे कि उसके पति को ज्ञात रहे कि वह उसी के पास है और उसे कोई चुरा नहीं ले गया है !
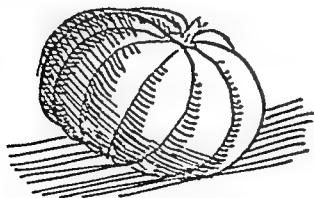
गोल लौकी

यह तोल में १ मन १० सेर है और परिधि में ६½ फीट है। इसको न्यूयॉर्क निवासी श्रीयुत एल क्लेवर्ग ने अपने खेत में उगाया था।

नींबू
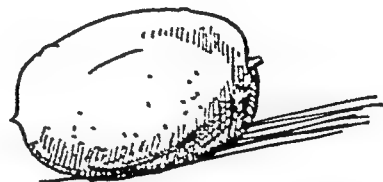
यह नींबू परिधि में २२ इञ्च है और तोल में दो सेर। इसको कैलिफ़ोर्निया के श्रीयुत डब्ल्यू० जी० मिकी ने उगाया था।
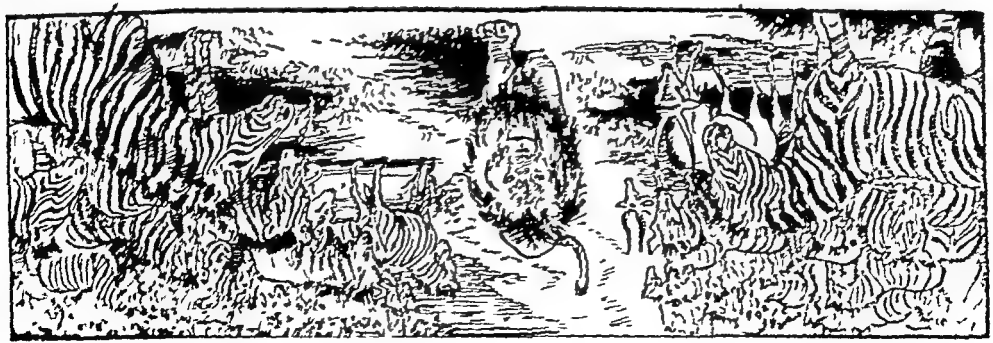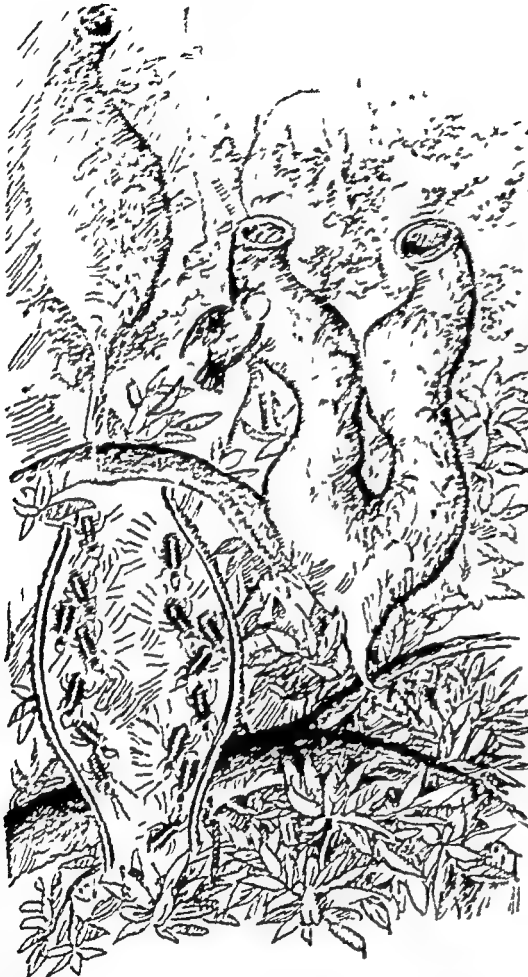
पाँच बहिनें जिनका जन्म एक साथ हुआ !

आठ वर्ष पूर्व की बात है। उत्तरी कैनेडा के कैलैन्डर नामक नगर मे एक छोटे से घर में पॉच बालिकाओ का एक साथ जन्म हुआ था। जन्म के क्षण से ही उनकी चर्चा प्रत्येक दैनिक और साप्ताहिक पत्र में बडी धूमधाम के साथ होना प्रारम्भ हो गयी। जिसको देखिये वही उन बालिकाओ के सम्बन्ध मे पूछताछ कर रहा है। तब से आज तक उनके सम्बन्ध मे किसी भी चल-चित्र की अभिनेत्री अथवा राजकन्या की अपेक्षा अधिक चित्र छापे जा चुके हैं और लेख लिखे जा चुके हैं। इन बालिकाओं के नाम हैं—सैसिल, मैरी, वाईवॉन, ऐनैट् और ऐमिली। ये ससार भर मे सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं, और इन्होने सबसे कम यात्रा की है। इनके सरक्षक हैं सम्राट् जॉर्ज। १९३९ मे जब सम्राट् कैनैडा मे पधारे थे, सब बहिनो ने इन्हे 'पापा' कहकर सम्बोधन किया था।

आज ये पॉचो बहिने खूब स्वस्थ हैं, सुखी हैं, और मस्त हैं। अन्य बालकों की भॉति अनेक बातें उन्हें अच्छी लगती हैं और अनेक बुरी लगती हैं, किन्तु सबको एक वस्तु बहुत प्रिय है—ग्रामोफोन। हर रात्रि को सोने से पूर्व उनकी नर्स उन्हे ईसा की प्रार्थना का रैकर्ड सुनाती है। उस समय सब बहिने ऑखें बन्दकर और हाथ जोड़कर अपनी अपनी चारपाइयो के पास घुटने टेककर बैठ जाती हैं और अपनी नर्स के साथ प्रार्थना गाती हैं।

लगभग तीन वर्ष हुए होगे जब प्रथम बार ये बहिने गिर्जेघर गई थीं। उनके जीवन में वह एक महत्त्वपूर्ण दिन था क्योंकि उस दिन रोमन कैथलिक चर्च ने अपनी स्वीकृति घोषित कर दी थी कि बालिकाओ मे विवेक ने जन्म ले लिया था।

जब से वे आठ मास की हुई हैं वे कभी डैफो अस्पताल से बाहर नहीं गई हैं और न उन्होने अभी तक अपने जन्मस्थान के ही दर्शन किये हैं। अपने महल में—जिसकी वे स्वामिनी हैं—उनका वैज्ञानिक ढङ्ग से लालन-पालन हो रहा है, जिससे कि वे आदर्श नागरिक बनें। आज के दिन तक उन्हें देखने के लिये भीड लगी रहती है।

यात्रा के दिनों में पाँचों बहिनों को खेलते हुए देखने के लिये सहस्रो की सख्या मे जनता उमड पड़ती है। सगे सम्बन्धियो, पड़ौसियो, और बहिनो को धन एकत्रित करने का यह बडा सुन्दर अवसर होता है। इस प्रकार पाँचो बहिनों के नाम बैंक मे २ लाख पौण्ड जमा हो गये हैं।

डैफो अस्पताल और बालिकाओं की देखभाल मे प्रतिवर्ष ११,००० पौण्ड व्यय हो जाता है। इनका जीवन बड़ा सुखी है।

अभी तक ये अपने घरवालो से बहुत कम सम्पर्क में आई हैं। केवल एक ही बार उन्होंने अपने घर के अहाते के बाहर आने का साहस किया है—सम्राट् और सम्राज्ञी के स्वागत के लिये।

इस बात की बहुत देखभाल रखी जाती है कि कहीं कोई बालिकाओं को चुराकर न ले जाये। एक अवसर पर एक नर्स बहुत ही घबरा गई थी। उनके सोने के कमरे में जाकर वह एक पर्दा हटाने लगी जिससे कि कमरे में अधिक वायु आ सके और उसकी दृष्टि मैरी के पलङ्ग पर गई। वह खाली था। नर्स बहुत ही भयभीत हो गई। बच्चे चुरानेवालो ने कई बार पाँचों बहिनों को चुरा ले जाने की धमकी दी थी। क्या वे मैरी को वास्तव में चुराकर ले गये हैं? शीघ्र ही अस्पताल भर मे खोज कराई गई पर मैरी का पता न लगा। सहसा एक चौकीदार ने सोने के कमरे में से जाते समय वाईवॉन के पलङ्ग पर एक उठा हुआ कुब्बड़ सा देखा। उसने नर्स को बुलाया। कम्बल हटाने पर मैरी दिखाई पड़ी, वह वाईवॉन से ठड के कारण चिपटी पड़ी थी।

विशेषज्ञों की सम्मति मे सैसिल सुगमतापूर्वक अपना पाठ याद तो कर लेती है किन्तु जी झट ही उचट जाता है; वाईवॉन में नेतृत्व ग्रहण करने के विशेष लक्षण हैं; पॉचों मे मैरी सबसे अधिक सुस्त है; ऐनैट सबसे अच्छा गाती है; ऐमिली का वाम हस्त बहुत चलता है और उसे छेड़खानी करना अच्छा लगता है।

घोड़े और आदमी की दौड़

मत्स्य-युद्ध

पाँव से लिखाई !

सदाशिवगढ़, काठियावाड़, के यह महोदय लिखने के लिये हाथ के स्थान पर पाँव से काम लेते हैं !

दो कुर्सियोंवाला चाँदी !

[illegible]

पाँव से लिखाई !

सदाशिवगढ़, काठियावाड़, के यह महोद
के लिये हाथ के स्थान पर पॉव से काम लेते हैं

दो पुतलियोंवाला चीनी !

टेलीफ़ोन नम्बर याद थे। उसकी नोट-बुक में सहस्रों ही प्रमदाओं के नाम, पते और टेलीफ़ोन नम्बर दर्ज थे। प्रतिदिन ही उसके कृपाकटाक्ष की इच्छुक ५० या ६० ललनाएँ उसके सम्मुख उपस्थित की जाती थीं।

उसको गर्व था कि उसके द्वारा अमरीकन युवती के सौन्दर्य-सुयश का विस्तार हुआ। बहुधा वह साधारण असुन्दर युवतियों को जिनकी ओर कोई दूसरी बार आँख उठाकर भी नहीं देखता था परम रहस्यमयी सुन्दरियों के रूप में नाट्यशाला के मञ्च पर खड़ा करके दर्शकों की आँखों में चकाचौंध पैदा कर देता था। रूप और लावण्य द्वारा कोई भी युवती उसकी नाट्यशाला के मञ्च पर आकर अपना भविष्य सुधार सकती थी। जो कुछ उनमें जादू रहता या वह ज़ीगफ़ील्ड की अपनी देन थी।

अपव्यय करने में ज़ीगफ़ील्ड किसी भी राजा-महाराजा से कम न था। केवल वस्त्रों के लिए वह लाखों डॉलर व्यय कर डालता था और उनके लिए योरप, भारतवर्ष और एशिया के बाज़ारों को छान डालता था। वस्त्रों के अस्तर तक बढ़िया-से-बढ़िया रेशम के होते थे। उसका विश्वास था कि कोई भी स्त्री अपने को तब तक सुन्दरी अनुभव नहीं कर सकती जब तक कि उसके तन को सुन्दर वस्त्र न स्पर्श करें।

उसने 'शो बोट' को तीन महीने के लिये स्थगित कर दिया था—कारण कि उसको उपयुक्त हैट न मिल सके थे। एक नाटक पर ढाई लाख डॉलर व्यय करने के उपरान्त उसने उसे एक ही बार स्टेज करके फिर न खेलने दिया। कारण कि उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह नाटक ज़ीगफ़ील्ड-परम्परा के योग्य न था।

उसने जो कुछ भी किया पूर्ण ठाटबाट के साथ ही किया। यद्यपि उसके यहाँ सैकड़ों ही पत्र आते रहते थे, परन्तु उसने आजीवन उत्तर में कभी एक पत्र नहीं लिखा। पतझड़ में जैसे हवा के झोंके के साथ पत्तियाँ उड़ती फिरती हैं, उसी प्रकार उसके यहाँ तारों और केबलों (cables) का ताँता बँध जाता था। वह जहाँ भी जाता था, अपने साथ में अनेक तार के फ़ार्म ले जाता था। स्टेशन से दफ़्तर पहुँचने तक वह पूरा पैड समाप्त कर देता था।

[illegible] को विश्वास नहीं होता, परन्तु यह सत्य है कि नाट्यशाला में ही मञ्च पर सूचना भेजने के लिए वह तार के फ़ार्म से ही काम लेता था। वह किसी को पुकारकर कहने के स्थान में उसको तार द्वारा ही सूचना देता था। एक बार उसने अपने वातायन से झाँककर अपने सामने के वातायन में खड़े एक पुरुष से उच्च स्वर में कहा—'मैंने तुमको तार दिया था। तुमने उसका उत्तर नहीं दिया !''

उसके लिये टेलीफ़ोन-घर के सामने से बिना दर्जनों आदमियों को कॉल किये निकल जाना एक असम्भव बात थी। अपने [illegible] को टेलीफ़ोन करने के निमित्त वह नित्य ही छः बजे प्रभात में जग पड़ता था। सवह्-अठारह [illegible] की रकम के लिये वह बड़ा उपाय सोचा करता था और दूसरे दिन ही लाखों डॉलर वॉल स्ट्रीट में खोने में उसे [illegible] भी देर न लगती थी। उसने एक बार ५,००० डॉलर उधार लिये और अपने देश के इस पार से उस पार [illegible] के लिये एक स्पेशल रेलगाड़ी किराया करके व्यय कर डाले।

उसके सौन्दर्य [illegible] से ललनाएँ अपने को सुन्दर अनुभव करने लगती थीं। नाटक की प्रथम रात्रि में [illegible] उसकी ओर से फूलों का गुच्छा और टेलीग्राम मिलता था। कुछ अर्द्ध-विक्षिप्त महिलाओं के [illegible] उसका व्यवहार सदैव सौम्य और स्नेह रहता था।